भूमिका

सब ढूंढे सबे म्याराजको, सब म्याराजमें सब ।
सो सबे म्याराज जाहेर करी, सो सब म्याराज देखसी अब ।। १
एह बानी बीतक राजकी, जो रूहों खिलवत श्री धाम ।
ताको माया देखाय के, सब पूरे मनोरथ काम ।। २
सो बीतक जाहेर करी, हक के हुकम ।
बदले जिकर करने, सब जगावन आतम ।। ३
पहिले उतरे धाम से, भया एक दिन व्रज में ।
दूसरा दिन भया रासका, तीसरे वीतक महंमदसे ।। ४
चौथे दिन देवचंद्र जी, किल्ली लाए अरशसे ।
पांचमा दिन इमाम का, लड़े दजालसों माया में ।। ५
छठा दिन जुमे का, जहां जमे मोमिन होए ।
सात में पोहोंचे धामको, हज तमाम हुई तिन से सोए ।। ६
सो वीतक इन किताब में, लिखे वचन विशाल ।
पहिले मोमिन सुन के, होए इत खुशाल ।। ७
पीछे सब संसार में, जाहेर होवे जोर ।
एह लीला एह चरचा, जश गाए ठोर ठोर ।। ८
होए एही सोर सुपन में, पोहोंचे मलकूत जब ।
तब विस्नु रोए पीछे फिरे, मूल अक्षर जागे तब ।। ९
जब याद करे सुपन को, तब उठे आठों भिस्त ।
नूर की नजरों चढ़े, सबों अपनी पाई किस्त ।। १०
इहां बेर एक जरा नहीं, जाको निरमान त्रसरेन ।
यामें सारी वीतक, ए जो वानी कही सब बेन ।। ११
महामति कहे ऐ साथजी, कालू-बका शोर बीच कान ।
गरमी धून त्रसरेन में, हके कर दई सब पहेचान ।। १२

प्रकरण १ चौपाई १२

मंगलाचरण

श्रीजी साहेब के कदम, सिर पर धरे जब ।
धाम वरनन जान्या अपना, सक सब मिटी तब ॥ १
कछू न उपजे दिलमें, इन लीला की सक ।
ए मेहेर मूल अंकूर की, करी सुभान हक ॥ २
निसबत अपनी करके, सब दै है पेहेचान ।
तब छीपी कछू ना रही, एह द्रढ किया ईमान ॥ ३
कहा तुम आए अरससे, खेल देखन के काज ।
तुम रबद किया इसक का, मिल ठकुरानी जी राज ॥ ४
तिस वास्ते तुम को, उतारे मिने खेल ।
फेर तुम को याद दिया, तीसरा तकरार लेल ॥ ५
मैं कह्या अलस्तो बि रब कुम, तब बले कह्या तुम ।
तुम भूलोगे खेल मिने, तुमे तीन बेर बरजे हम ॥ ६
फेर तुमको खेलमें, देखाए दो तकरार ।
तुमारे संग मैं रह्या, तुम जाने परवरदिगार ॥ ७
तोहूं मनोरथ मन के, हुए नहीं पूरन ।
तिस वास्ते इंड तीसरा, रचा तुम कारन ॥ ८
मैं महंमद को भेजया, सो वास्ते तुम कलाम ।
जबराईल ले आइआ, मैं लिख भेजा इस ठाम ॥ ९
हुकम जोस मैं दिआ, सो तुमारी खातर ।
तुमको चेतन कर के, पोहोंचावें अपने घर ॥ १०
सरत करी महंमद ने, मेरी होवे तीन सूरत ।
दसमी अग्यारही जाहेर, करों वखत क्यामत ॥ ११
सातों निसान तुम वास्ते, लिखे हरफ बातन ।
हकीकत मारफत के, खोले द्वार मोमिन ॥ १२

आमर जो इस्लाम की, सो दई तुमारे हाथ।
पांचों न्यामत बका की, सो रहे तुमारे साथ ॥ १३
एक जोश जबराईल, और अरश की आमर।
और कुंजी तारतम, असराफील करे फजर ॥ १४
रूहें अरस अजीम की, इसलाम तिनके साथ।
मैं भेजे पैगंबर पैदरपे, याके हके पकड़े हाथ ॥ १५
अग्यार सौ साल के , लिख भेजे रब कलाम।
सो खोलने को बहुतों किया, बीच दीन इसलाम ॥ १६
मुकता हरफ तुम वास्ते, लिखी इसारतें इत।
सो मोमिन बिना ना खुले, कह्या फरदा रोज क्यामत ॥ १७
रूहअल्ला किल्ली ल्याइया, दई हाथ इमाम।
सिफायत करी महंमद ने, मोमिन की इस ठाम ॥ १८
मोमिन के वास्ते, महंमद अलेह सलाम।
लडाई करी दजालसे, बीच दीन इसलाम ॥ १९
लिखाए वसीयतनामें को, बैत-अल्ला करी पुकार।
सो भी मोमिनों वास्ते, दुनी करी खबरदार ॥ २०
मसरक मगरब में, पोहोंचाए दिया पैगाम।
पांचों सरूप जाहेर हुए, देत हैं मोमिन ताम ॥ २१
बिछौना कर सिफायत का, बोलावत मोमिन।
उम्मत करके कहे, तुम आओ बीच रोशन ॥ २२
मैं तुमारे वास्ते, निकल न सक्या इंड।
तुमको अरस पोहोंचाए के, कायम करों ब्रह्मांड ॥ २३
तुम को अजू खबर नाहीं, मैं पुकारत चौथी बेर।
लिखे वसीयतनामें मके से, फुरमाया फेर फेर ॥ २४
अब तुम को हुकम भेजे, और जोश बुद्धि आम।
हक सुभान अरस में, जगावने भेजे हुकम ॥ २५

याद करो तुम आप को, अपना मूल अंकूर ।
तिन सामना देख के, तैसा करो जहूर ।। २६
अब तुमे सिखापन, देने रही ना लगार ।
एह तुम केहेलावत, इसक रबद करनहार ।। २७
तुम जानो हम दूर हैं, बैठे तले कदम ।
खेल तो कछू है नहीं, है नजीक तुमारे आतम ।। २८
अरस की भोम का, कहूं न छेह आवत ।
खेल तीनों कालों है नहीं, तुम कहाँ हो कित ।। २९
केती बेर तुम को भई, देखो अरस साईत ।
छ दिन लिखे कुरानमें, उत बेर पल ना वारत ।। ३०
एक दिन व्रज में खेले, दूसरे दिन वृन्दावन ।
तीसरे दिन महंमदे, सरत करी मोमिन ।। ३१
चौथे दिन रूहअल्लाह, पांच में दिन इमाम ।
छठा दिन जुमे का, मोमिन मिले तमाम ।। ३२
खेल देख पीछे फिरे, दिन सातमें अपने ठोर ।
हजूर हक सुभान के, जाए बातां करियां जोर ।। ३३
एह तो अव्वलसे लेयके, आखरलों करी मजकूर ।
अब इनके दरम्यान की, कहों ताको अंकूर ।। ३४
श्री महामति कहे ऐ साथजी, एह है मंगलाचरन ।
याद करो वीतक को, सब मिल के मोमिन ।। ३५

प्रकरण २ चौपाई ४७

अथ धाम लीला

अब कहूँ मैं धाम की, जो है घर मोमिन ।
इत रमत राज सों, हमेसा वतन रूहन ।। १

जाकी एक फनक पर, अग्र भाग धरा इंड ।
ताको गिरधारी कहे, कहा बडाई ब्रह्मांड ।। २

जाको जोगी एक बाउरो, विस्वनाथ कह्या नाम ।
व्रजनाथ ताको कहे, कहा बड़ाई इस काम ।। ३

भरतार जो इन ओंकार का, ताको नंदका कहे नन्दन ।
कहा ठकुराई इन में, दे इस मानंद इन ।। ४

ऐसे अंधे अग्यान लोक, अस्तुत में निंदा आई ।
ऐसे आराधते करन, है मौन सुखदाई ।। ५

अब कहेना अरस अजीम का, जित सबद न पोहोंचे सुकन ।
ताथे केहेना सुपन आकारसे, रूप आतम मता चेतन ।। ६

मन चेतन बुध पारकी, क्यों पोहोंचे जाग्रत सार ।
पर केहेनी ऐसी होत है, लिए सनमंध आकार ।। ७

दिल जुवां और श्रवना, दई हक तरफ नजर ।
केहेनी ए इन भांत की, हक मारफत नूर फजर ।। ८

तिस वास्ते रूह को, एही है आराम ।
आहार पीवना लिवास, चलन बैठन एही ठाम ।। ९

हंसना रोवना बेहेवार, विरह इसक इन मांहे ।
मोमिन की एह नेह है, और न कह्यो जाए ।। १०

हुकम हक सुभान का, मोमिन दिल बसत ।
ए निसवत अर्स अजीम की, बखत वाहेदत साबत ।। ११

हक हादी रूहें एक तन, सत चिद आनंद रूप ।
एह लीला नूर जमाल की, अति सुंदर रूप अनूप ॥ १२
भोम जिमी आसमान जल, सब नूर वाय सुखदाए ।
ए इसक रूहमय चेतन, कायम जात सदाए ॥ १३
पार न जिमी वाहेदत का, दसो दिस नाहीं छेह ।
अपार आठों सागर, गिरद दिवाल नूर की जेह ॥ १४
फिरती बीस हवेलियां, बड़े सोले दरबार ।
चढत मोहोल मुनारो पर, नूर रोशन काहू न सुमार ॥ १५
सागर बीच टापू बन्यो, मोहोल जवेर नूर ।
हक हादी रूहें खेलत, सो क्योंकर कहों जहूर ॥ १६
जिमी एक रस बराबर, नूर ऊंचा नीचा नाहें ।
नूर दरखत नूर दोरी बंधे, सो क्योंकर आवे जुबांए ॥ १७
नव भोम दसमी आकाशी, क्यों सिफत कहूँ इन ठाम ।
भोम हीरे की एक रस, दो सै एक हास धाम ॥ १८
एक हाँस तीस मंदर, गिरद फिरते छ हजार ।
छ हजार हार साम सामनी, सिफत नाही सुमार ॥ १९
साम सामने मंदिर झलकत, द्वार दीवालों थंभ नूर ।
उपर तले सब झलकत, सो क्योंकर कहों जहूर ॥ २०
माहें नकस कटाव चित्रामन, थंभ दिवालें पुतली नूर ।
साम सामे परछंदे बोलत, याको कह्यो न जाए जहूर ॥ २१
भोम हीरे की उज्वल, चढती दसमी लग आकास ।
सब भासत तले ऊपरलों,सो क्योंकर कहों प्रकास ॥ २२
चौक हवेली अन्दर, चारों तरफों देखत ।
अंदर भासे लवाजमे, सो क्यों कर कहूँ विवेक ॥ २३
एक छज्जे दोए पौरियाँ, फिरती गिरद दोए तरफ चार ।
रङ्ग नूर जुदे जुदे झलकत, ए मोमिन खबरदार ॥ २४

जोगवाई सब रूहमय, कमाड़ दर्पन रङ्ग ।
जिनके बिंब वन भासा, कै नूर लेहरा उठे तरङ्ग ।। २५
चौखट नूर जवेर की, फिरते मणि झलकत ।
नूर लेहेरें किरन सामनी, सो क्यों कर कहों इत ।। २६
दोए बाजू दोए चबूतरे, आगूं इन दरबार ।
तीनों तरफों कठेड़ा, नूर मोमिन खबरदार ।। २७
नकस कटाव चित्रामन, भमरी फेरत जवेर ।
कै रङ्गों किरने उठे, सुन मोमिन होवे जेर ।। २८
बीस थंभे नूर के, तरफ ऊपर चबूतर ।
रङ्ग जुदे नूर झलकत, लरे किरन सब ऊपर ।। २९
चार हीरे चार मानिक, और चार पुखराज ।
दोए पाच दोए नीलवी, कही जाए न जागा राज ।। ३०
किरन लरत रङ्गन की, दस मेहेराब द्वार ।
रङ्ग हीरे दोए चबूतरे, याकी कहा कहों सिफत सुमार ।। ३१
ऊपर छात भौम दूसरी, छज्जा मन्दर दस ।
चढ़त चढ़त भौम दसलों, ए सोभा अति सरस ।। ३२
दो कोने दो चहबच्चे, सोले हाँस जो तिन ।
जल खुसबोए बेहेकत, झलकत नूर रोशन ।। ३३
नूर झलकत हीरे पगथी, और चढ़ता चढ़े आसमान ।
दाएं बाएं दोए चबूतरे, नूर सिफत न आवे जुबांन ।। ३४
झलकत हीरे देहुरी, किरन उठत आसमान ।
पैठत अन्दर अरस के, सुख ना इनके समान ।। ३५
फिर हार दोए मन्दरों, तिन बीच गलीयां तीन ।
लरत किरन थंभन की, देखे मोमिन दिल आकीन ।। ३६
हार दोनों तरफ की, मन्दिरों बीच दीवाल ।
लरत किरन थंभन की, देख मोमिन होए खुसाल ।। ३७

चौखट दरवाजे नूर के, नूर सामी नूर लरत ।
कमाड दर्पन रङ्ग नूर के, सामने नूर भासत ।। ३८
मसाल मन्दर अन्दर, हक दिल माफक लवाजमे ।
नरम बिछौने दुलीचे, क्यों कहूँ इन अकलसे ।। ३९
ऊपर सेज सुरङ्गी नूर की, नूर चौकी नकस कटाव ।
नूर हार जवेर झलकत, देखो मोमिन जो ए भाव ।। ४०
सब साज संदूकें नूरकी, है दिल माफक हक ।
हार काढ़ पेहेनावे आपमें, दोऊ लिए नूर इसक ।। ४१
नकस कटाव दिवाल में, जानवर पुतली अनेक ।
पडछंदे नूर सोहामनो, नूर झलकत नेक से नेक ।। ४२
चौकियाँ मन्दिर नूर की, झलकत नूर सिंहासन ।
हिंडोले कड़े कंचन, झलकत नूर रोसन ।। ४३
डब्बे तबके सीकियाँ, नूर भरे सब साज ।
अतोल अमोल शीशे अनगिनती, इत रूहें रमें संग राज ।। ४४
सब साज हर मन्दिरों, होत दिल चाहा सब ।
जब दिलमें रूह लेवहीं, रुजु पहिले होवे तब ।। ४५

चौक पहेला चौरस हवेलियोंका

छोड़ हार दो मन्दिर, साम सामी गलियाँ तीन ।
आगे दरवाजा चौक का, देखे मोमिन दिल आकीन ।। ४६
दाएं बाएं दो नूर के, दरवाजे दोए मेहेराब ।
पांच पांच मंदिर दो तरफों, झलकत नूर अति आब ।। ४७
पैठत दाहिने हाथ पर, नूर मंन्दिर स्याम सेत ।
दस दस मन्दिर लगते, देखे मोमिन दिल सावचेत ।। ४८
ए मन्दिरों बीच सीढ़ियाँ, भोम दूसरी लग चढ़त ।
दोए बाजू दोए चबूतरे, देखत नूर बढ़त ।। ४९

बीस मन्दिर सनमुख तिनके, बीच त्रिपोलिए सनमुख ।
आरोगे चौक पहिले मिने, कह्यो न जाए ए सुख ।। ५०
महामति कहे ऐ साथजी, आगे कहों दूसरा चोक ।
जाके सुने थे संसार का, ताप मेट होए अशोक ।। ५१

प्रकरण १ चौपाई ५१

चौक दूसरा चौरस हवेलियोंका

आगे चौक दूसरा, बीस बीस मंदर चारों तरफ ।
चौक नूर किरन लरे, कह्यो न जाए ए हरफ ।। १
चोक अस्सी मन्दिर का, चारों तरफों चार द्वार ।
गली बारे चारों तरफों, नूर पोरी चौबीस हर द्वार ।। २
फिरते मन्दिर चौक में, हर आगूं थंभ दोए ।
लरे नूर किरन ऊपर तले, सामी थंभ देवे सोए ।। ३
मन्दिर अंदर पैठिए, दुलीचे चित्रामन ।
नरमी इन पसम की, हक हादी रूहें आराम ।। ४
सुंदर सेज नूर की, तिन आगू चौकी जवेर ।
नकस कटाव चित्रामन, जोत चीर चली ज्यों सेर ।। ५
आधी पांखडी चित्रामन, ताको कीजे वरनन ।
तो जोत देखावे अधिक, फेर सिफत करे मोमिन ।। ६
फेर अधिक भासे तिनसों, यों करते जाए उमर ।
ख्वाव द्रस्ट मन बुध सों, क्यों कहूँ नूर काएम घर ।। ७
एक आधी पांखडी को, जो सिफत ना होए ।
तो सारी चौकियों की, क्यों सिफत कहें सोए ।। ८
चौकी वरनन न होवही, तो क्यों कहूँ शोभा सेज ।
हक हादी इत पौढ़त, तो क्यों कर कहूँ एह तेज ।। ९

पर कहेनी सनमंध आकार के, हक तरफ बाएं एह नजर ।
ले बुध चित मन श्रवन, आराम इत ही फजर ।। १०
सुंदर सेज नूर की, नूर पाए हैं चार ।
नकस कटाव चित्रामन, सिफत न काहू सुमार ।। ११
पचरंगी पाटी नूरकी, नरम तलाई देत सुख ।
ऊपर चादर नूरकी, क्यों कहूँ सिफत इन मुख ।। १२
सेज बंध सिराने नूरके, ऊपर गालमसूरे नरम ।
हक अंग को सुख होत है, क्या कहें ख्वाब जुबां चरम ।। १३
चार डांडे नूर के, रंग जवेर मानिक ।
तिन ऊपर छत्री झलकत, सुख उपजे अंग हक ।। १४
झलके रंग जवेरों झालर, चारों तरफों नूर ।
छ कलस छ नूर जवेर के, कह्यो न जाए जहूर ।। १५
और लवाजमे सेजके, सो आवे नहीं जुवांन ।
हक दिलके माफक, लेहरां उठे आसमान ।। १६
नूर संदूक मन्दिर, साज सबे हैं सुख ।
पेहेनावा हक अंगका, क्यों कहूँ शोभा इन मुख ।। १७
नूर दिवालों मन्दिरों, नकस कटाव चित्रामन ।
बोले पडछंदे पुतली, होवे रूहों दिल आराम ।। १८
झलकत माची नूरकी, चौकियाँ सिंहासन ।
जुदे रंगों जवेर झलकत, हक बैठे इन सिंहासन ।। १९
हलत हिंडोले नूरके, लरै जवेर जडित कंचन ।
उठत किरन मन्दिरमें, सुख पावे रूह मोमिन ।। २०
नरम तलाई पसमी, सुजनी अति शोभाए ।
तकिए नूर तिनके ऊपर, ए रूहोंके सुखदाए ।। २१
डब्बे तबके शीशे सीकियां, मिने वस्ता धरे अनेक ।
हक दिल माफक जानिए, अद्वैत नूर भोम एक ।। २२

अमोल अतोल अगनित, गिनती कही न जाए।
पर कछुक कहे बिना, मोमिनके दिल क्यों आए ।। २३
श्रीमहामति कहे ऐ साथजी, तीसरा चौक सुनो कान।
ए मेहेर मेहेबूबकी, देखो अपनी पेहेचान ।। २४

प्रकरण २ चौपाई ७५

चौक तीसरा चौरस हवेलियोंका

चौक तीसरा देखिए, चारों तरफों चार द्वार।
अस्सी मन्दिर तिनके, सिफत न आवे सुमार ।। १
तरफ चारों तीन-तीन गलियां, पोरी चौबीस नूर।
कमाड दरपन रंग के, कह्यो न जाए जहूर ।। २
चोखट लाल मानिक, झलकत नूर दिवाल।
बीस बीस मन्दिर चारों तरफों, नूर झलकत नूर गुलाल ।। ३
नकस कटाव चित्रामन, जवेरनमें कै रंग।
जानवरों जातें जुदी जुदी, देखे मोमिन अङ्ग उमंग ।। ४
पैठत बीच चौक के, नूर भोम हीरे उज्जवल।
गिरद ऊपर छात नूर की, ए जाने मोमिन दिल ।। ५
बीच चौकके आएके, देखिए चारों तरफ।
साज सबे रूह देखत, सो कही जो एक ही तरफ ।। ६
दोए थंभ हार मन्दिरों, आगे सोभा एह।
साम सामी किरन चौकमें, क्यों कहूँ लड़ाई तेह ।। ७
मन्दिर अंदर पैठत, चौखट झलकत नूर।
किमाड दरपन रंग के, कह्यो न जाए जहूर ।। ८
बीछौना दुलीचे नूर के, साज सबे सुखदाए।
हक दिल माफक देखिए, सब लवाजमें ताए ।। ९

रमते रूहां देखिए, पैठत मन्दिर संग ।
पाउंमें भूषण बाजत, सूक्ष्म स्वरूप उनमद अंग ॥ १०
कहूँ सेज ऊपर सोभित, कहूं सिंहासन ।
कई चौकी कई हिंडोले, झलकत नूर रोसन ॥ ११

चौक चौथा चौरस हवेलियोंका

पैठत चौथे चौकमें, साम सामने दरबार ।
गिरद फिरते असी मन्दिर, ए मोमिन खबरदार ॥ १२
चार चार दरवाजे तीन तीन गलियाँ, साम सामने नूर मन्दिर ।
दरवाजे चौबीस पौरियां, सुख पावत पैठत अंदर ॥ १३
हर मन्दिर आगे, थंभ दो दो जुदे रङ्ग ।
भोम हीरे की उज्जल, छात किरने लरे तरङ्ग ॥ १४
लवाजमें मन्दिरनमें, सो हक के दिल माफक ।
सब नूर जब झलकत, पैठत मन्दिर हक ॥ १५
स्वरूप सूछम अङ्ग उनमद, पांउ बाजत भूषन ।
संग हक हादी रूहें, पैठत मन्दिर रोसन ॥ १६
कहू बैठे जोड़े सेज पर, कहू जोड़े सिंहासन ।
काहू माची हिंडोले झलकत, देख पावे सुख मोमिन ॥ १७
मन्दिरों अन्दर चौक के, रहा नूर भराए ।
चारों तरफों किरन लरे, मोमिन के सुखदाए ॥ १८
मुख मीठी बानी बोलत, नख सिखलों अंग इसक ।
चाल चातुरी इसक की, रमे रूहों हादी हक ॥ १९

चौक पांचमा गोल हवेलियों का

चौक पांचमा देखिए, रमते आइए इत ।
साठ मंन्दिर चारों तरफों, नूर चौसठ थंभों झलकत ॥ २०

दरवाजे चारों तरफों, गलियां दोए तीन।
बीच गोल चबूतरा, झलकत नूर रोशन ।। २१
दोए पगथी नूर की, चढ़िए ऊपर तीसरे।
फिरते थंभ जो चौसठ,नूर झलकत रोशन ।। २२
चार पेहेलु आठ ऊपर, सोले ऊपर तीन।
आठ चार तीन के ऊपर, ए देखे रूह मोमिन ।। २३
थंभ चौसठ देखिए, तामें सोले रङ्ग।
बारे रङ्ग जवेर के, चार धात इन संग ।। २४
कहूँ रङ्गोंका बेवरा, मोमिनके सुख काज।
दोए पाच सामे नीलवी, दोए मानिक सामे पुखराज ।। २५
दोए पाच जोड़वे नीलवी, दोए नीलवी पाच सनमुख।
दोए मानिक सामे पुखराज, कह्यो न जाए ए सुख ।। २६
दोए पुखराज जोडे मानिक, ए सोले थंभ तरफ चार।
बारे बारे बीच में, सो मोमिन करे विचार ।। २७
हीरा लसनिया गोमादिक, मोती पाने पुखराज।
हेम चांदी नूर कंचन, पीरोजा कपूरिया रहे विराज ।। २८
और चार थंभ देखिए, मानू नूर दिवाल।
साम सामी किरन लरै, देख मोमिन होए खुसाल ।। २९
लरत थंभ दोए बीच में, तीसरा थंभ सरभर नूर।
मोमिन देख विचारसी, तो कह्या न जाय जहूर ।। ३०
फिरत कठेडा नूरका, चबूतरे गिरदवाए।
भमरियां कुरसी नूर की, सो क्यों कर कहूँ जुबांए ।। ३१
ऊपर इन चबूतरे, रह्या दुलीचा भराए।
पसम हाथ भर उठती, क्यों कहूँ नरमी ताए ।। ३२
चौक गिलम बिछाई नूर की, सोभित सिंहासन।
नूर चारों तरफों झलकत, नूर लहरें उठे किरन ।। ३३

फिरती बेल इन ऊपर, कै चित्रामन कटाव।
लहरें किरनें उठे नई नई, कह्यो न जाए एह भाव ॥ ३४
चारों तरफों चंद्रवा, चौसठ थभों के बीच।
जोत करे सब जवेरों, जेता तले दुलीच ॥ ३५
फिरत चंद्रवा चबूतरे, रह्या नूर ही नूर भराए।
झलकत झालर मोतिनके, सो क्यों कर कहूं जुवांए ॥ ३६
नकस कटाव चित्रामन, मिने जवेर जुदे रङ्ग।
उतरे किरन ऊपरसे, सामी लरे दुलीचे संग ॥ ३७
लगत कठेडा तकिए, मखमली अति नरम।
भर भर थंभ थंभ के लग, कह्यो न जाए मरम ॥ ३८
जेता एक कठेडा, सब में सुन्दर तकिए।
तिन तकिए रूहें भराए के, बैठे एक दिली ले ॥ ३९
जिनविध बैठी बीच में, वाही विध गिरदवाए।
तरफ चारों लग कठेड़ा, बीच बैठी रूहें भराए ॥ ४०
किरनें उठत नई नई, सिंहासन की जोत।
कै तरङ्ग इन जोत में, नूर नंगों से होत ॥ ४१
पाइये तिन तखतके, उत्तम रंग कंचन।
छ डांडे छ पाइयों पर, नूर सुन्दर सिंहासन ॥ ४२
गिरद फिरता किनारे कठेड़ा, थंभ किरन झलकत नूर।
सामे सिंहासन किरन लरे, सो क्यों कर कहूँ जहूर ॥ ४३
झलकत सुन्दर दुलीचा, ता ऊपर सिंहासन।
जोत जवेर झलकत है, बैठे हक हादी रूह रोशन ॥ ४४
जोड़े दोऊ सिंहासन, जुदे जवेर छ पाईए नंग।
दो हीरा दो मानिक, दो पाने उठे तरङ्ग ॥ ४५
दोए बाजू दोए तकिए, जवेर सबज रंग के।
किरनें उठे नूर की, सो क्यों कर कहूं तरंग ॥ ४६

लाल रंग दोए तकिए, धरे बराबर दोर।
नरमोंमें अति नरम है, भरी पसमी अति जोर।। ४७
दस रंग डाडे मिने, जुदे जुदे सोभित जे।
हर तरफों किरना लरे, चारों तरफों देखत ए।। ४८
एक तरफ देखत एक रंग, तरफ दूजा दूजी रंग।
यों दसों दिस रंग देखत, तिन रंगों कै तरंग।। ४९
डाड़े तीन जो पीछले, दोए तकिए बीच तिन।
कै रंग वृक्ष बेली बूटियां, ए कैसे होए वरनन।। ५०
चारों किरने चढती, दोरी चढत है किनार।
चारों तरफों फूल चढ़ते, अति घने करे झलकार।। ५१
तिन डाड़ों पर छत्रियों, अति सोभित हैं दोए।
कै दोरी बेली कांगरी, क्यो कहूँ सोभा सोए।। ५२
दोए कलस दोए छत्रियाँ, छ कलस ऊपर डाड़न।
आठों कलस अवकास में, करत जंग रोशन।। ५३
नकस फूल कटाव कै, कै तेज जोत जुगत।
देख देख के देखिए, नैना क्योंए न होए त्रपत।। ५४
चारों तरफों झलकत, फिरती छत्री इन।
नूर जवेरों झलकत, क्यों कर कहों रोशन।।५५
दो सिंहासन बीच में, झलकत लाल मानिक।
और न आवे नजरों, तो कह्यो न जाए माफक।। ५६
दोए कलश दोए छत्रियां, हक हादी पर लटकत।
जुदे जुदे रंगों जवेर, पांखडियाँ झलकत।। ५७
दोए सिंहासन एक चाकला, जोत नरम अपार।
हक हादी बैठे तखत, देख देख जाइए बलिहार।। ५८
जिमी जरे की रोसनी, भराए रही आसमान।
क्यों कहूं जोत तखत की, जहां बैठे बका सुभान।। ५९

सिफत कहानी इन जुबाँ, रंग नंग इत कै नाम ।
सबद तित पोहोंचे नहीं, बिन कहे न भाजै हांम ॥ ६०
ए जवेर कै भांत के, जिमी इन वाहेदत ।
पल-पल रूप प्रकासहीं, मोमिन जाने मारफत ॥ ६१
फूल बेल जोत गिलम, जोत ऊपरकी आवे उतर ।
जोत जोत सब मिल रही, रंग जुदे कहूं क्योंकर ॥ ६२
मूल मिलावा अपना, नजर मोमिन करो तित ।
पलक न पीछे फेरिए, ज्यों इसक अंग उपजत ॥ ६३
मूल स्वरूप है अपना, रूहें बैठी भराए ।
ए नजरें जोड़े तिनसों, करो मिलाप खुदाए ॥ ६४
श्री महामति कहे ऐ साथजी, करूं मूल स्वरूप वरनन ।
मेहेर करी मासूक ने, लीजो रूह के अंतस्करन ॥ ६५

प्रकरण ३ चौपाई १४०

श्री श्यामाजीका स्वरूप

अब कहूं हक हादीय की, ऊपर सिंहासन ।
नख सिख लों करूं वरनन, नूर बका रोसन ॥ १
कहेना झूंठी जिमी में, हक जात निस्बत बका ।
आवे नहीं जुबानमें, क्यों कर कहूं इत का ॥ २
कहे बिना आवे नहीं, मोमिन के दिल मांहे ।
हक हादी रूहें वाहेदत, सो क्योंकर आवे जुबांए ॥ ३
पर कहेनी है इन भांत की, लिए सनमंध आकार ।
देते कांन जुबां दिल, होत मोमिन अङ्ग करार ॥ ४
स्वरूप स्यामजीय का, लेवे दिल मोमिन ।
नख से ले सिख लों, करत हों वरनन ॥ ५

वय किशोर अति सुंदर, मुख अति गौर ।
मिने गेहेरी अति लालक, क्योंए आवे नहीं सहूर ।। ६
चरन कमल अति कोमल, सुंदर छवि नाजुक ।
क्यों कहूं सोभा फनन की, सब स्वरूपमय इसक ।। ७
सुंदर अंगूठे चरनके, सोभित अंगुरी जोड़ ।
और तिन उतरती, सो कह्यो न जाए मरोड़ ।। ८
रूहें निरखे ए नैनसों, दोनों ए कदम ।
उज्जवल नरम नाजुक, मोमिन छोड़े ना एक दम ।। ९
नखमणि जोत निरखिए, आवत नाहीं जुबांए ।
कै कोटि शशि सूर कहूं, तो केहेनी तले कुम्हलाय ।। १०
चरन तली अति कोमल, रंग उज्ज्वल बीच लाल ।
नरम रेखा पतली, रूह निरखत होए खुशाल ।। ११
लांक शोभित लेहेकत, पानी लाल जड़ाव रंग ।
टांकन घूंटी कांडे कोमल, पींडी अति नूर तरंग ।। १२
अब कहूं भूषन चरण के, एकै का है नूर ।
जवेर रसायन जिमीके, बिना कहे ना आवे जहूर ।। १३
अनवट सोभे अंगूठे, पाच नंग जवेरों जोत ।
हीरा मानिक पाच पोखरे, मिने नीलवी अति उद्योत ।। १४
छ बीटी अंगूठियों, सब शोभित हैं साज ।
जड़ाव ज्यों झलकत, पाने हीरे मानक पुखराज ।। १५
अनवट शोभित अंगूठे, मिने हीरे मानक पुखराज ।
पाना नीलवी शोभित, लरे किरन सब साज ।। १६
जाने जड़े कुंदन में, ए जडे घड़े ना किन ।
ए अङ्ग का अङ्ग भूषन, ए जानत भाव मोमिन ।। १७
सुदर कांबी झलकत, दो हार नूर हीरन ।
मानिक पाने पुखराज, नीलवी लसनीया रोसन ।। १८

फिरते मोती शोभित, पड़े पुतली नूर सुदर ।
शोभित इन कांबी मिने, नूर झलकत सब ऊपर ॥ १९
ता ऊपर कडली नूर की, रंग जवेर सात नंग ।
झलकत नूर आसमान, कै लेहेरां उठे तरंग ॥ २०
सुदर शोभित घुंघरी, अति मीठे स्वर बाजत ।
अति छवि इन भूषन की, देखे उमंग अंग उपजत ॥ २१
दो नाकों बीच पीपर, कह्यो न जाए ए सुख ।
तिन ऊपर सोहे झांझरी, क्यों कहूं शोभा इन मुख ॥ २२
करकरी नूर जवेर की, मिने नाजुक छवि नरम ।
अति मीठे स्वर बोलते, ए कह्यो न जाए मरम ॥ २३
रंग नंग जवेर जो देखिए, मावत नहीं आसमान ।
एक रंग जो देखिए, जाने नाहीं इन समान ॥ २४
आलस न उपजावे अंगको, नरमी इन भूषन ।
साज सुर सोहावना, रूह हक बका अरस तन ॥ २५
बस्तर इन तनके, सो जुदे होए क्यों कर ।
पेहेनावा अरश बकाका, देखो रूहकी नजर ॥ २६
तार जोत नूर जवेर की, चरणिया नीलीलाए ।
नकस कटाव चित्रमन, सो आवत नाहीं जुबांए ॥ २७
फिरती कांगरी कटाव, जुदे जुदे जवेरों रंग ।
निरखत न आवे नजरों, कै लेहेरां उठे तरंग ॥ २८
मध्य फूल बेल कटाव कै, बेली नकस अनेक ।
जोत जवेरों झलकत, वाहेदत नूर रंग एक ॥ २९
झलकत हीरे चीन में, मोती बेल फिरत ।
नव रंग नाड़ी मिने, क्यों कहूं शोभा इत ॥ ३०
स्वेत श्याम लसनिए सिंदूरिए, रंग कखूबर केशर ।
लाखी लिबोई नारंगी, शोभे जाली नाड़े पर ॥ ३१

पेट पांसली देखिए, तो तेज के अंबार।
तेज नाम इन भोमका, वह बका रूहमय जोत अपार ॥ ३२
साड़ी रंग सिंदूरिए, मिने छुटक छापे कुंदन।
कई रंगों जवेर झलकत, क्यों कर कहूं रोशन ॥ ३३
तीन हारें किनार में, शोभित ऊपर मुख।
छेड़े बूटी जवेर झलकत, देख रूह पावत सुख ॥ ३४
मीही साड़ी अति शोभित, मिने भासत गौर अंग।
नूर दरिये लेहेरके उठत, रूह मावत नहीं उमंग ॥ ३५
कस कसती चोली अंग पर, शोभित कठिन पयोधर।
श्याम जड़ाव चोली शोभित, पाचरंगी पान ऊपर ॥ ३६
सबज जवेर अति झलकत, झलकत इन कांठले।
मोलिए हार हीरन का, क्यों कहूं शोभा ए ॥ ३७
उर ऊपर हार लटकत, जुदे जुदे जवेरों रंग।
शोभित हैं उर ऊपर, कै लेहेरें उठे तरंग ॥ ३८
हीरे लसनिये हार देखिए, जोत चीर चली आसमान।
साम सामी किरन लरे, सके न कोई भान ॥ ३९
एक हार जो नीलवी, नूर आसमानी रंग।
लटकट बीच दुगदुगी, पाच जवेरों कई संग ॥ ४०
पान घाट अति झलकत, मध्य हीरा पाने पुखराज।
झलकत मानक नीलवी, ए बाका भोम नूर साज ॥ ४१
तले मोती लटकत, दानासरीं सरस।
देख सुन्दरता इनकी, कह्यो न जाए एह जस ॥ ४२
हार मानिकका देखिए, लालक भासै सब ठौर।
और न आवे नजरों, नूर लहेरां उठत जोर ॥ ४३
हार मोतिन का दखिए, दोनों सिरे शोभित।
सिरे साफ अति सुदर, सिफत न जुबां समात ॥ ४४

हार चंपकली का, अति सुन्दर है छब ।
शोभित है उर ऊपर, कह्यो न जाए सबब ।। ४५
सात लरी चीन शोभित, हर लरों दस रंग ।
जवेर जुदे जुदे झलकत, कै लहेरां उठै तरंग ।। ४६
पटली दोऊ चीन की, जोत चीर चली आसमान ।
लहेरें किरना उठै नई नई, कोई नाहीं इन समान ।। ४७
कंठसरी कंठन में, शोभित है अति जोर ।
जानूं कंठ में मिल रही, जुदे देखावे ओर ।। ४८
बाहू तले लटकत, शोभित बाजू बन्ध ।
किरनां लरैं आसमान में, कही जाए न सनंध ।। ४९
शोभित है अति सुंदर, झाबे जुगत जड़ाव ।
कई नूर लेहेरां किरन उठे, कह्यो न जाए एह भाव ।। ५०
झलकत झावों बीच में, श्याम कसबी रंग ।
किरन नूर दरियाव ज्यों, कै लेहेरां उठै तरंग ।। ५१
कोनी आगल कंकणी, मिने जड़ाव जांबू रंग ।
नूर जवेरों झलकत, शोभित कुदन संग ।। ५२
शोभित झाबे चूड़ के, कोनी ऊपर इन ।
नवरंग जवेर चूड़ में, झलकत नूर रोसन ।। ५३
हीरे मानिक पाने पोखरे, और पाच नीलवी जोर ।
ए किरन जंग करत है, जंग जवेर नूर ठोर ।। ५४
तले पाच मोती लटकत, दो मोती ऊपर ।
सुंदर मानिक बीच में, कह्यो न जाए पटंतर ।। ५५
लालक सामी देखिए, जो जोत भरी आकाश ।
औरों न आवै नजरों, कह्यो न जाए प्रकाश ।। ५६
नवरंग जुदे जुदे, पूर दरिया नूर रंग ।
लहेरां आवै ऊपर एक दूसरी, कई लेहेरें उठे नूर तरंग ।। ५७

पाच नंग पोहोंची मिने, ज्यों जड़ाव कुंदन।
हीरा मानक पांने नीलवी, पाच रंग रोशन ॥ ५८
सातों पटली जड़ाव ज्यों, कै नंग झलके मिने नूर।
किरना लरें आसमान में, सो कह्यो न जाए जहूर ॥ ५९
हस्त कमल अति कोमल, हथेली अति नाजुक।
मीही रेखा ता बीच में, मोमिन जाने बेसक ॥ ६०
नरम अंगुरियां पतली, नख हीरा जोत प्रकाश।
लहेरां झलकत जोत की, मावत नहीं आकाश ॥ ६१
दसों अंगुरियां शोभित, वींटी जुदे जवेरों रंग।
दो अंगूठां पूरे अंगूठी, उठै दरपन नूर तरंग ॥ ६२
एक बीटी मानिक की, रंग लाल अति जोर।
जो नजर भर के देखिए, तो द्रस्ट ना रंग और ॥ ६३
बीटी हीरे शोभित, जोत चीर चली आसमान।
बींटी पांने देखिए, तो और नाहीं इन के समान ॥ ६४
बीटी जो पुखराज की, और नीलवी नूर।
पाचों लसनियाँ शोभित करे मोती नूर जहूर ॥ ६५
मुख चौक अति सुन्दर, अति शोभित जहूर।
गेहेरी शोभित लालक, आवे न मांहे सहूर ॥ ६६
कांनो झावे झलकत, जुदे रंग नंग जड़ाव।
मानिक हीरे पाने पोखरे, कह्यो न जाए एह भाव ॥ ६७
फिरते जवेर झलकत, बीच में झलके फूल।
किरन लरें आसमान में, क्यों कर कहूं एह सूल ॥ ६८
शोभित है कानों मिने, जड़ाव जुगत पान।
भर कानों मोती लटकत, जोत न मावे आसमान ॥ ६९
भरे गौर गलस्थल, हंसत हरवटी मुख।
अधूर लाल छवि देखत, कह्यो न जाए जुबां ए सुख ॥ ७०

दांत कली दाड़म छवि, ऐनक ज्यों भासत अंग ।
मुरली शोभे नासिका, कै लेहेरां उठे तरंग ॥ ७१
तले पाच मोती लटकत, दो मोती ऊपर ।
सुन्दर मानिक बीचमें, कह्यो न जाए पटंतर ॥ ७२
लालक सामी देखिए, जो जोत भरी आकाश ।
और न आवे नजरों, कह्यो न जाए प्रकाश ॥ ७३
टीलड़ी शोभित नासिका, लाल रंग झलकत ।
नैन चपल अति शोभित, सिफत कही न जाए इत ॥ ७४
काजल रेखा शोभित, अत नैना नूर खेल ।
चपल चतुर चंचल, सुन्दर झावे बेल ॥ ७५
श्याम भ्रू गौर शोभित, गौर शोभावै श्याम ।
हंसत नूर मुख ऊपर, वस्त बका भोम आराम ॥ ७६
बेना चौक निलाट पर, पांचों मोती लटकत ।
चीर चली जोत हीरेकी, मानिकसों एह लरत ॥ ७७
जोत पाने की क्यों कहूं, झलकत जोत पुखराज ।
नीलवी अति शोभित, नंग पांचो रहे विराज ॥ ७८
दोनों सरे मोतिनकी, मांग ऊपर शोभित ।
तीन हीरे हार त्रिसेथिये, एह जुबांमें ना आवत ॥ ७९
दो तरफों मोती चढ़ते, नूर भरा आसमान ।
करने लवने शोभा धरे, सो आवे नहीं जुबांन ॥ ८०
कोर साड़ीकी झलकत, करन लवने ऊपर ।
तिन किनार जवेर की, जुदे रंग क्यों कहूं पटंतर ॥ ८१
सिर ऊपर सोहे राखड़ी, मध्य मानिक जोत अपार ।
और रंग ना आवे नजरों, तो क्यों कर कहूं सुमार ॥ ८२
तिन जोड़े जोत जवेर की, सो तो तिनके माफक ।
क्यों कहूं ख्वाब जुबांनसों, ठौर देखे ना शोभा हक ॥ ८३

वेन जुगत जड़ाव की, सोभित है अति जोर ।
वेन व्याल ज्यों लहेकत, कह्यो न जाए मरोर ।। ८४
जुगत जड़ाव जवेर, गोफने तीनों शोभित ।
फिरती फिरती घूंघरी, स्वर मीठे अति बोलत ।। ८५
तले फुमक लटकत, श्याम कसबी रंग ।
सुन्दर किरना शोभित, कै लेहेरां उठे तरंग ।। ८६
चार बंध चोलीयके, शोभित वेन तले प्रकाश ।
सात हारके सात फुमक, सो जोत न मावे आकाश ।। ८७
रंग जुदे जुदे शोभित, नाके रसान समान ।
नख सिखलों सरूप देखिए, आवे नहीं जुबांन ।। ८८
एक एक छिनमें, रूप धरे कै करोर ।
दिल चाह्या होत है, क्यों कहूं आकारे और ।। ८९
पर केहेनी है इन भांतकी, लिए सनमंध आकार तमाम ।
रूहोंके चितवनका, एही ठौर है आराम ।। ९०

प्रकरण ४ चौपाई २३०

श्री राजजीका शृंगार

सूरत नूर जमाल की, बसत बीच बका ।
पातशाही कायम अरसकी, प्रेम पिलावे हक सका ।। १
पार न अरस बकाकी, जिमी बाग मोहलात ।
कै पातशाहियां इनमें, सब नूर अंग एक जात ।। २
सब मोहोल मन्दिर नूरके, चेतन चाल इसक ।
कहेनीमें ना आवहीं, हकके दिल माफक ।। ३
रमे हक हादी रूहें, जिमी नूर प्रकाश ।
तेज एक जवेरको, जोत न मावे आकाश ।। ४

भोम बका वाहेदतमें, हीरा एक रस धात।
नूर सुपेती इनकी, कह्यो न जाय विख्यात॥ ५
जब खुशबोय बेहेतक, चित्त चाह्या सब ठौर।
रूहें निसबती पावहीं, नाहीं कहेनेको और॥ ६
तेज नूर प्रकाश जो, शीतलता सुखदाय।
आराम उपजावे अंगको, अपना रूप देखाय॥ ७
ले सुगन्ध पाउं बेहेकत, सब सुख उपजावै एक अंग।
हुकमसों चेतन चले, दे रूहों अंग उमंग॥ ८
आसमान है नूरका, कहूं तेज ना खाली ठौर।
पातशाही हक सुभानकी, ना सरीक ना निमूना और॥ ९
बका शब्द किरनसे, कै कोटि इंड उपजाय।
तिनके जोत जवेरका, क्यों कर आवै जुबांय॥ १०
तिन भोमके जवेर, सो तो तिन माफक।
कहेना ख्वाब जिमी मिने, पहिनावा अरस बका नूर॥ ११
कै क्षणमें छवि देखावहीं, चित्त चाह्यो जहूर।
शोभा दें हकके अंगको, सो तो है हकका नूर॥ १२
रूह चाहे दिलमें, देखन शोभा हक।
तैसी छबी देखावत, जैसा धरे इसक॥ १३
हक सूरत देखे बिना, कही न जाय फजर।
दिल कान जुबां सुने श्रवणों, हक तरफ बांयें नजर॥ १४
कहेनी इन भांतकी, लिए सनमन्ध आकार।
बुद्धि विचार बका मिने, रूह पावत है करार॥ १५
वय किशोर अति सुन्दर, मुखारविन्द गौर।
मिने लालक गहेरी शोभित, चाहिए देखे एही सहूर॥ १६
केस चुएमें भीगल, बेहेकत अति खुशबोय।
पाग सारंगी सिर पर, रंग सेंदुरिये शोभाय॥ १७

जुगत जवेर जड़ावकी, किरना लरै आसमान।
देख कहेनीको रूह दौडत, आवै नाही जुबांय ॥ १८
सुन्दर कलगी लटकत, चढते पांचों फूल।
जुगत जवेर जड़ाव की, कहेनी एही भूल ॥१९
नूर नूर की क्यों कहू, झलकत जोत आकास।
क्यों कर इन जुबां कहूं, जोत बका परकास ॥ २०
पाग ऊपर दुगदुगी, मध्य लाल जोत मानिक।
तले मोती लटकत, माफक दिल है हक ॥ २१
विराजै कलगी दुगदुगी, हमेशा जोत जहूर।
क्यों कर इन जुबां कहू, इन कलंगीका नूर ॥ २२
तिलक शोभित रंग कंचन, रेखा भासत है तिन।
मध्य लाल बिन्दु विराजत, देखे हौज कोसरकी मीन ॥ २३
भ्रू बंके श्याम सोभहीं, गौर शोभावे श्याम।
ए छबी रूह विचारही, अति सुख पावै आराम ॥ २४
नयन चपल अनियाँ तीखीं, गुणवन्ते गम्भीर।
तिरछी चितवन देखती, लागत आशिकों तीर ॥ २५
लाल रेखा शोभित, अति रसाल नयनांय।
लज्जा लिये पल पापन, अति सुन्दर अलवेलाय ॥ २६
जुलफें पेच दर पेचकी, दोनों तरफ शोभाय।
रूह आशिककी इनसों, कांहू न निकसो जाय ॥ २७
कानन मोती लटकत, सिर चार दाने सुन्दर।
बीच लाल करकरी बालेमें, सुख पावे देख नजर ॥ २८
भरे गौर गलस्थल, बीच झांई लाल झलकत।
सुन्दरता नासिका सोभित, हरवटी अति हसत ॥ २९
लाल अधुर शोभा धरे, दन्त दाडिम कली ऐनक।
बीडी मुखमें मोरत, क्यों कहूं शोभा हक ॥ ३०

मुख चौक छवि अति सुन्दर, कंठ शोभा कही न जाय ।
छवि छाती हक सुभानकी, क्यों कर आवै जुबांय ॥ ३१
पेट पांसे निरखिये, जानू तेज अम्बार ।
नाम तेज भोम इन शब्दका, वह नूरमय नूर अपार ॥ ३२
कंठ कोमल सुभानकी, दोऊ बगलें अति गौर ।
पीठ खभे देखके, दिल आवे रूहों सहूर ॥ ३३
माछे छवि जा छाजत, कोनी कोमलता अंग ।
पोंहोचा रूह निरखत, मावत नहीं उमंग ॥ ३४
हस्त कोमलता क्यों कहूं, लिए शोभे गौर लालक ।
शोभित रेखा पतली, कही जाय न शोभा हक ॥ ३५
नाजुक नरम अंगुरियां, नख जोत न आवे जुबांन ।
कै कोटि ससि जो सूर कहूं, तो कहेनी तले ढंपाय ॥ ३६
शोभित सातों अंगुरियों, वींटी जो जड़ाव ।
नंग जुदे जुदे जवेर, रूह बलि जावे इन भाव ॥ ३७
लालक वींटी मानिककी, भराय रह्यो आसमान ।
और रंग न आवे नजरों, तो क्योंकर आवे जुबांन ॥ ३८
चीर चली जोत हीरेकी, शोभे अंगुरी हक सुभान ।
लरत जोत आसमान में, कोई सके न काहूं भान ॥ ३९
वींटी पांच पानेकी, रंग सबन शोभाय ।
जिमी अंबरमें देखिये, रंग एही रह्या भराय ॥ ४०
रंग आसमानी निलवी, कंचन रंग पुखराज ।
नाजुक अंगुलियों शोभित, अति छवि रही विराज ॥ ४१
फिरते मोती वींटी पर, ए शोभा कही न जाय ।
ए नूर हकके अंगका, शोभा अधिक देखाय ॥ ४२
करते चलवन अंगुरी, रंग करत सागर नूर ।
एक एक सामी देखिये, तो कह्यो न जाय जहूर ॥ ४३

जामा अंगको लग रह्या, जड़ाव जोत सपेत।
अंग गौर छवि भासत, कही जाय न शोभा सिफत ॥ ४४
दावन घेरा देखिये, झलकत जोत आसमान।
चढ़ती चूड़ी बराबर बाहुडी, शोभा कही न जाय सुभान ॥ ४५
पीठ ऊपर कोतकी देखिए, जानूं कै जुगत जड़ाव।
कै फूल बेल नकस, क्यों कर कहूं एह भाव ॥ ४६
कटाव ग्रीवा छवि छाजत, बेल जुगत जडे जानूं नंग।
किरना लरत आसमानमें, जुदे जवेरों जंग ॥ ४७
बगलों नकस केवड़े, शोभित दोनों ठौर।
क्यों कहूं जुगत जड़ावकी, एह शोभा अति जोर ॥ ४८
चीन जामेकी जड़ाव, फिरते नंग जवेर।
जानूं कै दरिया आवे नूरका, लहेर पर आवे लहेर ॥ ४९
मोलिए कांगरी कटाव, बन्ध लटकत रंग लाल।
क्यों कर इन जुबां कहूं, एह शोभा नूर जमाल ॥ ५०
कडली कांड़े शोभित, मिने सात रंग के नंग।
शोभा देखी सुभानकी, अंग मावत नाहीं उमंग ॥ ५१
पोंहोची जड़ाव देखत, पांचों जवेर जुदे नंग।
पाच हीरे मानिक पुखरे, नूर लहेंरा उठे तरंग ॥ ५२
ए जड़े न घड़े न समारे, हककी जात जहूर।
शोभा देवे सुभानको, सो कह्यो न जाय नूर ॥ ५३
बाहू ऊपर बाजुबन्द, पटली जुगत जडाव।
जोत चीर चली आसमानमें, सो क्यों कर कहूं ए भाव ॥ ५४
झाबे बाजुबन्द के, जड़ाव जवेर नंग।
श्याम कसबी रंग की, कै लहरें उठे तरंग ॥ ५५
कंठी सोहे नूर कंठमें, चौपहल चारों तरफ।
किरना लरत आसमानमें, कह्यो जाए न एक हरफ ॥ ५६

फुंमक पांचों हारके, रंग नीले पीले गुलाल।
श्याम सेत लट कैं पीठ ऊपर, अंग शोभित नूर जमाल ॥ ५७
कंठ हार पांचों देखिये, रंग नंग जुदे जवेरों नूर।
ए बात विचार न आवही, बका चेतन नूर जहूर ॥ ५८
एक हार मोतिनका, दोनों सेरें दानेसरी।
नयनों भरके निरखिये, सामी देत उतरी ॥ ५९
हार मानिकका देखिये, जामें शोभित हैं नव रतन।
नंग जुदे जवेर झलकत, शोभा गिनती न होय जतन ॥ ६०
बीच दुगदुगी हारके, मिने पांच नंग पांच घाट।
क्यों कर इन जुबां कहू, नूर ठौर बका नंग ठाट ॥ ६१
मध्य हीरा विराजत, मानिक और पुखराज।
और पाना निलवी, रहें पांचों नंग विराज ॥ ६२
हार लसनिया निलवी, जोत चीर चली आकाश।
जंग करे आसमानमें सो कह्यो न जाय प्रकाश ॥ ६३
कमर पटका कसिया, नीले न पीले रंग।
जुगत जड़ाव नूर दरियां ज्यों, कै लहेरां उठत तरंग ॥ ६४
रंग आसमानी पिछोडी, जुड रही जामे पर।
भूषण सबों अंग भासत, क्यों कहूं शोभा सरभर ॥ ६५
छेड़े किनार शोभा क्यों कहूं, जवेर जुगत जड़ाव।
किरणा उठत आकाशमें, क्यो कर कहूं एह भाव ॥ ६६
दावन में भासत है, इजार केशर रंग।
लाल जडाव कै नेफे मिने, शोभित है नवरंग नंग ॥ ६७
सेत श्याम लसनिया, सिंदूरिया केशर कखुंबर।
लाखी लिबोई जांबू रंग, सुख पावत देख नजर ॥ ६८
पींडी ऊपर पायचा, मीही चूडी नाजुक।
मोलीए फिरती कांगरी, क्यों कहूं शोभा हक ॥ ६९

चरणों चारों भूषण, मीठे स्वर बाजत ।
झांझर जुगत जडावमें, करकरियां शोभित ।। ७०
झांझर मिने घूंघरी, नाके वाले शोभे कुन्दन ।
क्यों कर इन जुबां कहूं, बाजे नाजुक हक तन ।। ७१
पांच रंग पटली मिने, सोभित सातों नंग ।
कांबी जुगत जड़ावमें, कै लहेरें उठे तरंग ।। ७२
दो हार हीरे शोभित, मध्य मानिक पाने पुखराज ।
फिरते मोती मिने, रही पुतलियां विराज ।। ७३
नाजुक चारों भूषण, आपस न देवे अंग ।
बाजत सुर सुहामने, करे जोत जवेरों जंग ।। ७४
टांकन घूंटी कांडे कोमल, पान रंग गुलाल ।
लाल लांक लहेकत सोभित, चरणतली विशाल ।। ७५
मीहीं रेखा चरणकी, फने सुन्दर अति शोभित ।
अंगूठे जोड़ अंगूठी, सो क्यों कहूं शोभा इत ।। ७६
उतरी तीन अंगुरी, नाजुक अति नरम ।
शोभा नूर जमालकी, कहते लगे सरम ।। ७७
नख मणि जोत प्रकाशकी, आवत नहीं जुबांए ।
कै कोटि ससी जो सूर कहूं, तो कहेनी तले ढंपाय ।। ७८
श्री महामति कहे ऐ साथजी, ए सरूप लो चितमें ।
तुम बैठे बका मिने, ए पावे वीतक तुमसे ।। ७९

प्रकरण ५ चौपाई ३०९

इसक रब्द (प्रेम संवाद)

देखो अरवाहें अरसकी, अपनी जो असल ।
तुम उतरे अरस अजीमसे, याद बातां करो मिसल ।। १

हमेसा हजूर में, होत रब्द इसक ।
अपना आप सरावहीं, कहे हमारा बुजरक ।। २
हक कहे रूहनसों, मैं तुमारा आशिक ।
तुम माशूक मैं आसिक, इनमें नाहीं शक ।। ३
बडी रूह कहे हकसों, इसक मेरा कायम ।
तुम माशूक मैं आशिक, सच्चे मेरे कलाम ।। ४
सब रूहें मिलके कहे, हमारा इसक अधिक ।
तुम माशूक मैं आशिक, ए जानों तुम बेसक ।। ५
हकें कह्या सबनको, मैं करूं ना रबद ।
तुमे सब सुध होयसी, जब देखो दुनिया हद ।। ६
हकें लिया दिलमें, मेरी साहेबी बुजरक ।
देखलाया रूहनकों, करों बेवरा इसक ।। ७
रूहें मागे मुझपे, मैं बरजूं सबन ।
वास्ते खेल देखनको, होवे सब मगन ।। ८
तब मैं बरजूं इनको, ज्यों अधिक दिल चित चाहे ।
ए बातें सारी खेलकी, इनको कबहुं नाहें ए ।। ९
आतुर होय मांगै फेर, मैं साहेदी करी सबन ।
तुम भूलोगी लैलमें, कहूं देखो न बका दिन ।। १०
एक खेल देखाऊं रातमें, कालमायाका इंड ।
दूसरे आधी नींदमें, देखो जोगमाया ब्रह्मांड ।। ११
केतिक रूहन के दिलमें, खेलका चाहा रहै ।
पूरन करने तिनकी, फेर तिसरा ल्याऊं ए ।। १२
तिनमें भेजूं रसूल, पढे मेरे कलाम ।
खोल न सके खेलका, जो मिले दुनी तमाम ।। १३
दूसरी सूरत रसूल की, रूहअल्लाह धरै नाम ।
मैं किल्ली देऊं तिनको, खोलने को कलाम ।। १४

तीसरी हकी सूरत, ले चारों बेर वारस ।
दावा करे दुनी मिने, जाहेर करे अरस ॥ १५
जुदी जुदी शाहेदी, दे तीनों सूरत हक ।
इलम लुदन्नी ल्यायके, भाने सारी शक ॥ १६
जमा होवैं जुमे के दिन, सब मोमिन एक ठौर ।
सायत जाहेर कै अरशकी, कहूं कछू सक न रहेवे और ॥ १७
जाने रूहें जागके, करे बका मजकूर ।
इसककी तरफकी, काहू ना रहे सऊर ॥ १८
मों पै मांगे इसक, अति आतुर तो होय ।
द्वार इन रूहनके, कबूल करूं मैं सोय ॥ १९
मैं इसक देऊं इनको, बुलाऊं हजूर ।
तब इसक रबद का, इनमें करों मजकूर ॥ २०
दे जोश हुकम तारतम, और देऊं जाग्रत बुद्धि नूर ।
और रूह फूंकी मैं अपनी, सबमें जाहेर होवे जहूर ॥ २१
खेल तीनों करों कायम, नूर अक्षर नजर चढाय ।
उठे आठों भिस्त जो तिनमें, कायम जाने इप्तदाय ॥ २२
जिन ताले जैसी कजा, हकें लई नजर ।
तिनको होसी रोसनी, होसी नूर नजर ॥ २३
हक दिलमें जो लेवहीं, जानूं आगूं रखी बनाय ।
तब आदि अनादि फलका, हुआ दिलमें चाह ॥ २४
खेल आदि फल नूरसें, रूहें दिलमें आई ।
अनादि फल इसक की, नूरके दिल उपजाई ॥ २५
रूहों दिल पैदा हुआ, खेल देखें नूर मकान ।
पैदा कर फना करें, झूठा खेल जहांन ॥ २६
आगे एक दूसरी के, देवे खबर खेल ।
मांगे मिलके हकपे, कैसी कदर लैल ॥ २७

सब रूहों के दिलमें, एही आयो विचार ।
मांगे खेल नूर मकानका, देखाओ परवरदिगार ॥ २८
पहर रहा पिछला, तब उठे नूर जमान ।
जाने रूहें आगूं ही खड़ी, दिल देखन खेल खुशाल ॥ २९
हजूर हक हादीय के, रूहें पहोंची धाय ।
पूछा रूहों हादीयने, आज कहां खेलनको जाय ॥ ३०
तब जवाब रूहों दिया, था पैदा नूर मकान ।
सो ए खेल देखना, हम फना जिमी आसमान ॥ ३१
दिया जवाब हादीयने, जो बडी रूहें दरगाह एह ।
इनमें क्या है देखना, उपज फना होय जाय ॥ ३२
हक नजीक रूहनके, बातां सुनी बनाय ।
क्यों रूहों दिल ऐसी आय, खेल देखनको जाय ॥ ३३
क्या देखोगे इनमें, निमेषमें होय नाश ।
खेलत है जूठे सबे, मांही मुरदों का वास ॥ ३४
तुम भुलोगी अरशको, और सुध ना रहे आप ।
जुदे-जुदे हो जावोगे, रहे न कछु मिलाप ॥ ३५
याद न करो मुझको, ढूंढे न पावो ठौर ।
खेल खुमार फरेबका, चढ़सी जहर जोर ॥ ३६
खोज करोगे बहुतेरी, मेरी तरफ न जानी जाय ।
मजाजी मुरदे दिलमें, रहते हैं इब्तदाय ॥ ३७
कोई भाई कहि बोलाएंगे, कोई कहेंगे भतीजे ।
कोई महतारी होय के, हेत करें तुमसें ॥ ३८
प्यार करो तुम तिनसों, हमारे एही सजन ।
तुमें बरजे मेरी तरफसे, तुम जानो ना दुसमन ॥ ३९
पूजे आग पानी पथर, मुरदे मिजाजी दिल ।
तुम चलोगे राह उनकी, झूठे खेलमें मिल ॥ ४०

चित्त तुमारे खेलमें, इसक न काढो जाय।
बिन पहिचानें आपको, सकै न कोई जगाय ॥ ४१
फेर करों मैं तीसरा, लैलतका तकरार।
तिनमें भेजूं रसूल, कौलमें मेरा करार ॥ ४२
इलम लदून्नी बीचमें, अपनी देऊं खबर।
तुम ऊपर बरसाऊंगा, रहमतका अम्बर ॥ ४३
तब जवाब रूहों दिया, ऐसा कौन खेल सरस।
क्यों भूलें वतन अपना, ऐसा अजीम अरश ॥ ४४
खेल खुशाली देखते, कोई अपना भूलें आज।
वाहेदतकी रूहन को, क्यों कर छूटे मिलाप ॥ ४५
तरफ तुमारी छोडके, क्यों ढूंढ़ें तरफ और।
वास करे मुरदों मिने, क्यों भूलें अपना ठौर ॥ ४६
भाई भतीजे होय के, क्यों भूलावे हम।
मुरदे महतारी करके, क्यों निसबत भूलें तुम ॥ ४७
हम मुरदोंमेंसे बसके, क्यों तिनसों करें प्यार।
अपनी निसबत छोडके, क्यों भूले परवरदिगार ॥ ४८
मजाजी दिलों मिनें, क्यों पूजे जिमी आग पत्थर।
इनकी राह हम क्यों चलें, राह इसक भूलें क्यों कर ॥ ४९
दो तकरारों बीचमें, क्यों सुध ना रहे हम।
ऐसे मगन होय के, क्यों भूलें तुमारे कदम ॥ ५०
चित्त हमारे खेलमें, क्यों ऐसे होय गरक।
सो निकसे ना अपने बल, ले तुमारा इसक ॥ ५१
और रसूल हम पर, ल्यावेगा फुरमान।
तिनसों चेतन होयके, क्या ल्याय न सके ईमान ॥ ५२
तुमसों बातें अबकी, खेलमें देओगे याद।
तब हम कैसे भूलेंगे, अपनी जो बुनियाद ॥ ५३

हमको तुम पहोंचाओगे, लदुन्नी इलम।
तब तुमारे कदम, क्यों कर भूलें हम ॥ ५४
तब जवाब हक ने दिया, देखोगे मोह जिमीन।
ल्याय ईमान भूलोगे, सके न कोई चीन्ह ॥ ५५
तब जवाब रूहों दिया, क्या हम जाएंगे दूर।
तुमसे जुदे क्यों रहें ए कैसा मजकूर ॥ ५६
दूर कहूं ना जाओगे, बैठो पकर कदम।
इतहीं बैठे देखाऊंगा, दे अपना लदुन्नी इलम ॥ ५७
हुआ चार घडी लग, हक हादी रूहों मजकूर।
उपरसे आय तले, सब रूहों करे सऊर ॥ ५८
करे एक दूजीको चेतन, जिन भूलो परवरदिगार।
मैं भूलूं तो तूं मुझे, कीजो खबरदार ॥ ५९
तू भूले मैं तुझको, करूं खबरदार।
जिन जुदे कोई पडो, करो बन्दगी परवरदिगार ॥ ६०
भोम तले चौक पांचमा, साठ फिरते मन्दिर।
आगे चौसठ थंभ जवेरके, रूहे बैठे चबूतर ॥ ६१
फिरता विच चबूतरा, चढते पगथिया दोय।
तीसरे चढ चबूतरे, नूर कह्यो न जाय सोय ॥ ६२
चौसठ थंभ चबूतरे, फिरते जो गिरदवाय।
सोले रंग जो तिनमें, जंग किरणा कही न जाय ॥ ६३
फिरता कठेडा शोभित, फिरती बिछाई गिलम।
नकस कटाव चित्रामन, शोभा कही न जाय नरम ॥ ६४
चारों तरफों चन्द्रवा, रह्या चबूतरे भराय।
झालर झलके मोतियन, शोभित है गिरदवाय ॥ ६५
मध्ये नकस चित्रामन, जुदे जवेरों रंग।
साम सामी किरणां लरैं कै लहेरां उठे तरंग ॥ ६६

उतरे किरणां ऊपरसे, लरे सामी दुलीचे किरण।
आवे फिरती किरणें कठेडे, जंग करे थंभ रोशन ।। ६७
सामी सिंहासन के, किरणा जोत अपार।
रूहें भूषण किरणा उठत, सो कह्यो न जाय सुमार ।। ६८
क्यों कहूं सिंहासनकी, दोऊ जोडे रंग कंचन।
छ पाईए जुदे जवेरके, देख क्योंए न तृपते मन ।। ६९
छ डांडे जुदे जवेरके, ऊपर शोभित छत्री दोय।
मध्य माणिक लालक के, और रंग न देखे कोय ।। ७०
दोय छत्री दोय बीच कमल, जुदे जवेर पांखडी रंग।
किरणा नूर दरिया ज्यों, कै लहेरां उठे तरंग ।। ७१
फिरती झालर झलकत मोतिन, ऊपर आठों कलस।
रंग नंग जोत जवेरकी, ए तो बका ठौर अरस ।। ७२
दोय सिंहासन एक चाकले, बैठे रूहें हादी जमाल।
नूर है चबूतरे पर, लग बैठी रूहें कमाल ।। ७३
श्री महामति कहे ऐ साथजी, देखो अरश रूहों नजर।
अपने दिल अरशको, जगाओ वखत फजर ।। ७४

प्रकरण ६ चौपाई ३८३

इति धाम लीला

अथ व्रज लीला

हुकम हक सुभान का, सो बसत दिल मोमिन।
और जोस जबराईल है, सो लुदंनी करत रोशन ।। १

बुध जाग्रत दई हक ने, रूहअल्ला मोमिनों साथ।
एह मेहेर सब रूहन पर, जाके हके बनाए अपने हाथ ।। २

ताकी वीतक कहावत, हक सुभान का हुकम।
प्रेम पख जाहेर किया, आए देखो मोमिन तुम ।। ३

पहेले तुम कहाँ हुते, फेर आए किस ठौर।
दरस करो तुम तिन का, तुम बिना न समझे और ।। ४

और तो कोई है नहीं, तुम बिन खेल सब ख्वाब।
तुमे खेल देखाए के, देवे धाम उठना सवाब ।। ५

तुम तो बैठे उतहीं, एक बेर न लागी लगार।
तेहज घड़ी धाम की, माहिर करी परवरदिगार ।। ६

अब कहूं दरमियान की, जो तुमारी वीतक।
ताको तुम देख के, मुह फेरो तरफ हक ।। ७

श्रीकृष्ण जन्म

पांचमें चौक धाम के, भोम तले की बैठक।
कंचन रंग सिंघासन, जुगल सरूप बैठे इशक ।। ८

भराए बैठे चबूतरे, श्री राज के सनमुख।
इशक रब्बद खिलवत की, मांग्या है खेल दुख ।। ९

एक दूसरी को कहे, होईयो तुम सावचेत।
मैं भूलूं तो तूं मुझको, बताओ मूल खिलवत ।। १०

तू भूले मैं तुझ को, सिताब देऊं जगाए ।
एक दूसरी को केहेने लगी, एही दिल में ल्याय ।। ११
रब्द किया आपन राजसों, तिस वास्ते होओ खबरदार ।
लगी अंग सो अंग लगाए, जिन भूलो परवरदिगार ।। १२
राजें इछा डारी भगवानपें, ज्यों जाग्रत देखत इंड ।
त्यों ही देखे सुपन में, होवे खेल ब्रह्माड ।। १३
खेल ब्रह्मांड ऐसा होवे, मैं सखियनकों भेजों तिनमों ।
खेल देखे जाए इनमें, करें ए फेर बातां मुझसों ।। १४
कुन फे यकून केहेते, हुआ खेल उत्पन्न ।
जाने आद अनाद का, ऐसा भया सुपन ।। १५
साथ ऊपर इछा भई, प्रगटी सब एक ठौर ।
व्रजमें आए देह धरी, इसक भरी सब जोर ।। १६
श्री ठकुरानीजी की रूह, सो प्रगटी घर वृष भान ।
ए तो सरूप इसक का, नजर तरफ हक सुभान ।। १७
पहिले नूर के दिल में, मैं देखूं इसक रूहन ।
हक सों प्यार है इनको, है कैसा प्रेम मोमिन ।। १८
तिन समें कंस काफर के, नूह था बीच हबसे के ।
वसुदेव देवकी कहे, भागवत वचनों में ।। १९
गरभ सातमाँ देवकी का, था मास सातमे में ।
खैंच धरा रोहिनी के, हुआ खासी इन सें ।। २०
भई खबर कंस को, देवकी गर्भ गयो गल ।
भला भया मारना मिटा, दिल भया निरमल ।। २१
हूद नन्द रहे व्रज में, था वसुदेवसों इखलास ।
छे बेटे मारे कंस ने, आठमेमें बड़ी आस ।। २२
हबसे के कारा ग्रह में, आए चत्र भुज दिया दिदार ।
वचन केहेके पीछे फिरा, देखा दो भुजा परवरदिगार ।। २३

ए नूर के मनोरथ की, रूह उतरी निज नूर ।
तापर जोस हक का, देख्या वसुदेव जहूर ।। २४
तब कह्या वसुदेवने, करो रछा अपनी तुम ।
हम डरत हैं कंस से, क्यों तुमे बचावें हम ।। २५
एह माया का बल, दोऊ प्रगट करी सिफत ।
वही सायत भूल गए, एह हमारा बालक इत ।। २६
तब राज ने कह्या, मोहे व्रज में पोहोंचाओ तुम ।
लड़की भई नन्द घर, ताए ल्याइयो न खाओ गम ।। २७
फिर वासुदेव ने कह्या, छोड दे सारा डर ।
मेरा हाल एह है, उठाऊं मैं क्यों कर ।। २८
एही बेर मुझे उठाओ, तो एलो मैं उठाए तुम ।
गिरी हाथ की सांकलें, अब पांउके क्यों गिरे हम ।। २९
जब पांउ उठाइया, टूटे पांव के भी तब ।
गिरा तोंके गले का, बंधन छूटे सब ।। ३०
एह तो काम होए चल्या, पर क्यों कर खुले द्वार ।
इहां वासुदेव आप ही, थे समरथ परवरदिगार ।। ३१
जिन एता काम किया, ताए द्वार खोलते केती बेर ।
आए दरवाजे आगे खड़ा, देखने लगा फेर ।। ३२
तब ही द्वार खुल गए, जिन जागे चौकीदार ।
ए ऐसे पड़े नींद में, होए सके न खबरदार ।। ३३
भादों वद अष्टमी, समें था मध रात ।
नछत्र रोहिनी मिने, एह वसुदेव की विख्यात ।। ३४
ऊपर वरसा होत थी, ऊपर फन धरी सेष नाग ।
बिजली मसाल ज्यों, यों देत चली मारग ।। ३५
दो हाथों बीच राज थे, चल्या लगाए छाती से ।
जमुना तट आए मिला, अब क्योंए उतरेंगे ।। ३६

होए गई दोए तरफों, मारग होए गया ।
वसुदेव पैठा बीच में, जल कमर लग भया ।। ३७
जमुना चरण कमल कों, किया चाहे परस ।
वसुदेव ऊंचा लिया राजको, फिर जल भया सरस ।। ३८
तब राज ने अंगूठा, जल को दिआ लगाए ।
तब ही जल उतर गया, वसुदेव पार गया लिवाए ।। ३९
महामत कहे ए साथजी, ए गोकुल मथुरा दरम्यान ।
ताकी और वीतक कहों, जामे तुमारी पेहेचान ।। ४०

प्रकरण १ चौपाई ४०

नन्द घर बधाई

अब कहूँ व्रज वीतक, जित सखियां पहिले तकरार ।
काल माया को ब्रह्मांड, देखाया परवरदिगार ।। १
नंद के घरों तिन समें, साठ वरसों भया आनंद ।
समे था परसूत का, थे गोप सबे उनमंद ।। २
वास्ते उछव करने के, घर धरे माट भरे गुलाल ।
सुन वधाई बेटे की, रहे हाल मगन खुशाल ।। ३
आंगने नेबू छांह थी, ता बीच दीप झूलत ।
कपासिया तेल मिलाए के, बड़ी जोत रोशन हुई इत ।। ४
एक आवे एक जात हैं, काहू न किसी की गम ।
वसुदेव आया तिन समे, काहू ना चीन्ही आतम ।। ५
तहां जनम समे, हुआ जशोदा के ।
पुत्री पधारी भोममें, उठाई वसुदेव तित से ।। ६
ले धरा बालक बदले, आप चला पीछे पाए ।
उन दाईने पुत्री कही, फेर पुत्र जुवां चलाए ।। ७

क्यों पेहेले पुत्री कही, अब क्यों कह्या बालक।
एह तो हमारा कसब है, यों ही कहें हम हक ॥ ८
भई वधाई नंद के, सुनते एह सुकन।
दौड़े गोप ग्वाले सबे, होए खुशाल मगन ॥ ९
एक दूसरे को छांटत, गुलाल मूठी भर।
कोई भरे माट दही के, छांटत लागे यों कर ॥ १०
इन कुलाहल समे, कोई काहू ना गिने लगार।
नगारे भेंरे झांझें ताल, लगा सवद होने बेसुमार ॥ ११
कोई ढोल बजावत, कोई सारंगी जंत्र तान।
रबाब ढाढ़ी गावत, पावत मंगन मान ॥ १२
इन समे कुतूहल की, कही ना जाए सिफत।
यों करते प्रत भया, ठाढ़े नंद इन बखत ॥ १३
देत असीस इन समें, नंद को सब जन।
विप्र वेद पढ़त हैं, खुश बोहोत सखियन ॥ १४
सेहेज आनन्द आप में, सबों गया भराय।
सुख इन समे को, कह्यो न जाए इन जुवांए ॥ १५
नन्द दान देवे को, भया चित्त उदार।
जिन जो मांग्या सो दिया, होए के खबरदार ॥ १६
लखमी ने लिया दिलमें, पोहोंचों मैं सिताब इत।
घर-घर दासी होए के, पाऊं सेवा इन वखत ॥ १७
सखियां सिनगार साज के, चल आवत मन्दिर से।
नन्द द्वार ठाडी रहें, कोई पैठे कोई निकसे मन्दिर में ॥ १८
जाए देखे दरशन राज का, सखियां खैंचे तरफ प्रेम।
देख वे गलित भई, छूट गया सब नेम ॥ १९
एक दूसरी सों बातां करें, ठाडी आंगन नन्द द्वार।
तुम सूरत देखी राज की, देखे आतम होत करार ॥ २०

सखी जब मैं देखती, जानों नजर ना फेरूं कित।
नैना क्योंए न अघावहीं, देखे बड़े दरिद्री इत ॥ २१
मिनों मिने बातां करे, फेर पैठ निकसे मंदर।
देख देख राज को हंसहीं, रूह सुख पावत अंदर ॥ २२
रात दिन यों करते, व्यतीत भए छे मास।
प्रेम सरूप नेह लगा, क्यों न छूटे आस ॥ २३
श्री महामति कहे ऐ साथजी, यह तुमारी वीतक।
ए पेहेला तकरार की, आगे बताऊं हुकम हक ॥ २४

प्रकरण २ चौपाई ६४

व्रज विहार

अब कहूं लीला व्रज की, जो रूहोंसों मजकूर।
एह वीतक स्याम सरूप की, करों रोसन नूर जहूर ॥ १
नन्द जशोदाके द्वारमें, रहे ठाड़ी सब कोई।
एक जाए एक आवत है, नित्य सनेह बढ़ता जाए ॥ २
कृष्ण को एक हाथों लिए, दूसरी ले उनके हाथ।
तीसरी खेलावत है, चौथी ले उनके साथ ॥ ३
यों करत एक दूसरी पे, ले ले देत सबन।
तब जशोदा जी कहे, छिन छोडों खेलाऊं मैं मन ॥ ४
तुम तो सारे दिन, लिए खड़ी नन्दलाल।
मुझे भी देओ अवसर, मैं देख होऊं खुशाल ॥ ५
मने भी कर ना सके, सकुच करे मांगते मन।
ए हेत करके खेलावत, मैं क्यों बरजूं सबन ॥ ६
इन भांत नित्य नन्द के, कोतूहल होवे द्वार।
सखियां हंस-हंस आपमें, देखें भूषन कंठ के हार ॥ ७

कोउ सुन्दरता बस्तर की, कोउ अति छबि लाल मुख।
एक दूजी का रूप देख के, बड़ो पावत सुख॥ ८
एक सखी ले राज को, पधराए अपने घर।
सेज पर पौढाएके चटावे, मलाई मिसरी मिलाए कर॥ ९
कृष्ण को हर ल्यावत, घर में रहे न कोए।
राज आप रहे गए, द्वार मूदो इन सोए॥ १०
नौजोवन किशोर वय, बैठे देखे सेज ऊपर।
बदल्या स्वरूप अपना, काम आतुर भई यों कर॥ ११
तब रमी संग राज के, पाया काम-केल कै सुख।
फेर बालक हो गए, अति प्रफुल्लित भया मुख॥ १२
अब राज को लेयके, गई नन्द के द्वार।
तिहां रूहें खड़ी हुती, लिया दूजी परवरदिगार॥ १३
कहां ले गई तू राजको, लगी पूछने सब।
ए उत्तर दे ना सकै, मुख कहे ना सके सुख तब॥ १४
मन में अति आतुरता, ए बात ना छीपे क्यों कर।
किन आगे कैसे कहूं, ए ढूंढ़े सखी वहां पर॥ १५
गई चल तिन के घर, ए मेरी सही सुन कान।
एक बात तोसों कहूं तोहे देऊं पेहेचान॥ १६
कहो सखी कौन बात, क्यों आतुर ऐसी भई।
मैं रेहे ना सकत, देखे कृष्ण जोवन सई॥ १७
तब सखी उत्तर दिआ, गेहेली होएगी बात इन।
वह तो सरूप सोहना, होत प्रेम सेहेज उतपन॥ १८
सो जहाँ प्रेम बसत, तित उठत कै तरंग।
तिन तरंगों में भाव कै, तिन से जोवन देखा अंग॥ १९
तब उनों ने कहा, तुम बुलाए ल्याओ घर राज।
जैसे मैं कहा तैसे तू कर, सिद होए तेरा काज॥ २०

भले सकारे मैं आऊंगी, तू जा घर अपने
मैं भी जाऊं घरों काम को, भोर मिलें नन्द द्वार में॥ २१
दूसरे दिन वह सखी, राज पधराए अपने घर।
लगी यों ही मिसरी चटावने, देखा जोवन सेज ऊपर॥ २२
रूप अपना बदल्या, भई काम आतुर से मिली राज।
सो हम पाया अति सुख, बोहोत विहार का साज॥ २३
फेर बालक वय होए के, पौढ़े सेज के ऊपर।
तहां से सखी ले चली, पोहोंचाए जसोदा नंद घर॥ २४
फेर मिली उन सही सों, क्यों बात छिपाई और।
सखी एती मैं तुझको कही, कहांलों कहों तिन ठौर॥ २५
जो अधिक कहो तो तू मुझे, तो बोहोत कही तिन में।
सखि एति मैं तुझको कही, तिनसे गेहेली कही मुझे॥ २६
श्री महामति कहे ऐ साथजी, ए व्रज के सुख मजकूर।
अजू एह बोहोत है, सो जाहेर करूं जहूर॥ २७

प्रकरण ३ चौपाई ९१

कंसको आकाशवाणी

ए केहेनी सिंहावलोकनी, फेर पीछली देऊं खबर।
जो मथुरा में वीतक, सो सुनियो कहूं यों कर॥ १
वसुदेव ले गया, वह लड़की अपने ठौर।
द्वार ज्योंके त्यों भए, रूदन किआ लड़की ने जोर॥ २
जागे इत चौकीदार, करी कंसके द्वार पुकार।
भया आठमां बालक, आया वैरी उस्तवार॥ ३
उठा कंस उन समै, खुले बंध आये खड़ा द्वार।
खोलो कुलफ इनके, ल्याओ बालक मारनहार॥ ४

जब बालक पेहेला भया, देवकी से जाचा वसुदेव।
देवकी देने ना करी, कह्या तूं ना जानत भेव ॥ ५
मैं वचन हारा कंस के, सो ना छोडों धरम।
कहे देवकी ए मारेगा, मैं जानत दुस्ट मरम ॥ ६
कहे वसुदेव ए केतिक, पर धरम न छोडें हम।
तोकों ऐसा ना चाहिए, जो फेरे मेरा हुकम ॥ ७
कहे देवकी ए मैं ना सहों, जो ऐसा बड़ा दुख।
बालक मारे मेरे आगे, क्यों रहे सकों सनमुख ॥ ८
तब वसुदेव ने कह्या, इन अधरम आगे कछू ना दुख।
सतवादी आगे भए, तिन के कष्ट सुन मेरे मुख ॥ ९
राज हरी-चंदने, वास्ते धरम के।
अपना आपा बेच्या, तारा लोचनी बेटा जे ॥ १०
तिनकी कथा कहे दई, और राज रुकमांगद।
सगाल सेठ चेलीओ, इनों धरम का था मद ॥ ११
ए सतवादी हो गए, जिनों सोंपी आतम।
ए ऐसे बलि भए, तब असत उड्या अधरम ॥ १२
जब स्त्री और पुरुष, ए बराबर दोए।
धरम चलत है तिन का, पार पोहोंचत सोए ॥ १३
एक खेंचें संसार को, एक खेंचे तरफ धरम।
ताको क्यों कर चले, वह समझे नहीं मरम ॥ १४
तिस वास्ते ए बालक , मैं ले जाऊं कंस पास।
जो तूं इनको ना दे, तो मेरी छोड़ दे आस ॥ १५
तब देवकी ने दिआ, लड़का वसुदेव हाथ।
ले गया कंस सभा मिने, मेरा कोल था तेरे साथ ॥ १६
सो मैं अपना पन पाला, जानो सो करो तुम।
देख कंस वसुदेव को, यों कर किया हुकम ॥ १७

दिल में सुख पाया, वसुदेव के ऊपर।
इन अपना धरम न छोड्या, कछू सक ना करी इन पर ॥ १८
क्या मारों मैं इनको, वह लड़का मारों मैं।
ताहि सों मेरा बैर, क्यों मारों और के ॥ १९
बालक पीछे फेर दिया, पहोंचाओ अपने ठौर।
मैं मारोंगा तिनको, जो आवे बालक और ॥ २०
वसुदेव ले बालक को, डाल्या देवकी की गोद।
देवकी ने देखा बालक को, अतंत पाया मोद ॥ २१
एह तो कारज कारन, करना बड़ा कारज।
अति उग्र अधरम ना करै, तो तामे होए गरज ॥ २२
आया नारद इन समे, कंस की सभा में।
आदर बड़ा कंसे किआ, तुम आए कहां से ॥ २३
तब नारदे कह्या, हम आए सभा इन्द्रासन।
तहां तुमारी बातें सुनी, सब मुख ते कहें वचन ॥ २४
अब राज गया कंस का, बुध गई है फिर इन।
बालक जो वसुदेव का, फेर के दिया तिन ॥ २५
सच्चा बालक तूं फेरया, ए किन की मसलत से।
तब कंसे कह्या, शत्रु मेरा होए आठ में ॥ २६
तब नारदे कह्या, कछू समझत वानी देव।
क्या जाने कौन आठमां, ए कौन कर पावे भेव ॥ २७
आठ निम्बू गिरद, माड देखाया आगे।
कहो कंस कौन आठमां, बताए देओ मुझे ए ॥ २८
यों नारद समझावते, भई कंस को सक।
मगाओ बालक वसुदेव पे, मारने की है झक ॥ २९
गया दूत वसुदेव पे, ले चलो बालक तुम।
ए हमको भेज्या, कंसे किया हुकम ॥ ३०

वसुदेव बालक ले चल्या, आए धरया कंस के आगे ।
तब ही वध उनका किया, ऐसी दुस्टाई दिल ले ।। ३१
ए धोल भगवान आवने के, होत कसाला जोर ।
जहां वस्त तहां कसोटी, करत कलिंगा सोर ।। ३२
यों छ बेटे मारे, सातमे पोहोचा व्रज में ।
बलभद्र जनमा रोहणी, भया एह हाल पुत्री से ।। ३३
देवकी उन पुत्री को, देवें ना क्यों कर ।
कंस द्वार पुकारही, ए तुमे मारे किन पर ।। ३४
तब कंस ने रिसकरी, प्रवेश किया बीच घर ।
छीन लई पुत्री देवकीसे, हुई दुस्टाई दिल पर ।। ३५
रूदन करे देवकी, आंसू चले दोऊ धार ।
वसुदेव बैठा देखत, कहे काहू दया नहीं लगार ।। ३६
जब ले पछाड़ी पाट पर, वे छूट खडी आसमान ।
रूप अष्टभुजा भवानी, कही कंस को पहिचान ।। ३७
ए मूरख मुझे तू क्या करे, आया मारनेवाला पांच कोस ।
तोको मारने को समरथ, है तुझ पर अफसोस ।। ३८
तब देखा आसमान को, गिरा मकुट सिर भोम ।
बड़े बाल सिर छूटे, भया बिकल बीच कौम ।। ३९
क्या कह्या इनने, कछू सुनी तुम बात ।
एक खवास ने कहा, ए बुरे सुकन कहे जात ।। ४०
ए फलाने क्या कह्या, देख रहा समाने मुख ।
दिल बिकल ऐसा भया, बड़ा जो पाया दुख ।। ४१
तब पासवान ठाडे हुते, उठाए मुकट धरा सिर पर ।
कह्या राजा भी चिंता करते, बैरी पांच कोस ऊपर ।। ४२
आओ आपन तखत पर, चलो करें मसलत ।
अब हीं ढूंढ काढ के मारिए, हमसे छिप ना सके इत ।। ४३

होए दलगीर पीछे फिरा, तब दिन चढ़ा घडी चार ।
मंत्री दुस्ट बुलाए के, करने लगा विचार ।। ४४
अब हमें क्या करना, बैरी आया पांच कोस ।
क्यों कर हम पावेंगे, हमें बड़ा भया अफसोस ।। ४५
बोले वचन दुस्ट मंत्री, जिन का भया होए जनम ।
ते बालक सब मारिए, एह काम करो तुम ।। ४६
एह तो जागा अपनी, तहां तुमारा है हुकम ।
हम समेत कबीले जाएंगे, करे कारज तुमारा हम ।। ४७
लेके बीड़ी सब उठे, बाट लै तरफ चार ।
मारों बालक जनमे, एही कर चले विचार ।। ४८
ए दैत रूप बहु धरे, जैसा चाहे मन ।
भेष बनाए पूतना, वह जुवानी पकड़ा तन ।। ४९
बहुत भूषन पेहेर के, वस्तर मीही नरम ।
स्तन विष भर के चली, इनको कोऊ न जाने मरम ।। ५०
मारत बालक ठौर ठौर के, जाय दिखावे स्तन ।
बोय आवत प्राण छूटहीं, आवे ना दया दुस्ट मन ।। ५१
यों करते आई व्रज में, मारते बालक पड़ा शोर ।
कोई वरज करे ना सकैं, एता करते जोर ।। ५२
जब नंद के द्वार ठाढ़ी रही, देखत रूप इन हाल ।
कहां कृष्ण मैं देखूं तिने, कहे वचन होय खुशाल ।। ५३
मोह भया सबन कों, कोई मार ना सके दम ।
ए कौन कहां से आई, कोई चिन्हे ना दुस्ट आतम ।। ५४
ले जशोदा के हाथ से, बालक लिया गोद ।
स्तन पान लगी करावने, मन धरके अति मोद ।। ५५
एही बैरी कंस का, मोकों भई पेहेचान ।
अब हाथ आया मेरे, अब मेरे हाथ न छूटे जान ।। ५६

लगी बोलावने बालक, देत है गाल चुम्बन।
ऊपर हेत करत है, अंदर दुस्टाई मन ॥ ५७
जब स्तन लगाया बालक, करने लगा पय पान।
लगा प्राण खेंचन, दिलमें बड़ा गुमान ॥ ५८
मेरे स्तन की बोय से, तब ही निकसत प्राण।
एतो अब लों लग रहा, याकी कछू ना होत पहिचान ॥ ५९
छोड़ छोड़ मुखसे कहे, दोऊ हाथों किया जोर।
छुटकाया छूटे नही, तब करने लगी शोर ॥ ६०
जसोदा गोपी देखके, दिल मूढ़ भया इन पर।
इन रूप पसारा अपना, था असल ज्यों कर ॥ ६१
जब लगे प्राण कढ़ने, तब पाऊं लगी घसने।
हुआ अति बड़ा सरूप तिनका, समे प्राण निकसन ॥ ६२
बालक स्तन न छोड़ही, लटक रहा ज्यों शिखर पर।
दौडे गोप चारों तरफों, चढ़ गये तिन ऊपर ॥ ६३
जाय गोद लिया बालक, सिताब आए उतर।
दिया गोद जशोमती, करत निछावर तिन पर ॥ ६४
अरी एह कहा भयो, हुआ कैसा विघन।
हम तो कछू न जानत, कछू ना काहूं के मन ॥ ६५
हम बैठे अपने घरों, थीं सही हम चार।
एक रूप सुन्दर धर के, हमे कछू ना भया विचार ॥ ६६
आय लिया बालक गोदसे, कराने लगी स्तन पान।
तिनमें से ऐसा भया, हम क्यों कर करें पहिचान ॥ ६७
हम मुह सामने देख रहे, जाने उतरी अपसरा इंद्रलोक।
मोहि लिये मन सबन के, था सबके मनमें जौक ॥ ६८
सइया टोले टोले से, सब कोई आवत धाए।
एही बात फेर फेर पूछें, जशोमती पै केहेलाए ॥ ६९

श्री महामति कहे ऐ साथजी, ए कह्यो पूतना चरित्र।
ऐसे व्रजमें कइ करे, भई लीला जो विचित्र ।। ७०

प्रकरण ४ चौपाई १६१

नन्दजीका आगमन

तिन समे नंद मथुरा मिने, वसुदेव सों था मिलाप।
बात पूछे बालक की, तुम जाओ व्रज में आप ।। १
मैं उतपात देखत हों, व्रज पर बड़ो विघन।
जाय रक्षा करो बालक की, देखियो दिल दे मन ।। २
गरगाचारज की बात, नन्दें दई बताए।
जब जनमपत्री लिखी, एही सुकन दिए बताए ।। ३
जो हम तुमसों कहें, एही सुकन जनम पत्र।
तुम भी हमकों कहत हो, हेत जान अपना मित्र ।। ४
अब हम जात हैं व्रजमें, किया वसुदेवको परनाम।
चलते सिखापन दई, रहियो सावचेत अपने काम ।। ५
जब नंद आया मारग में, सामें गोप मिले धाय।
वलभा देने लगे, रहे उत क्यों विलमाए ।। ६
कही खबर पूतना की, ऐसा किया इनें सोर।
यों कर बालक बच्या, एता भया हम पर जोर ।। ७
नंद आए पोहोंचिया, सुनी बात जशोदा मुख।
सिर धुन बातां सुनी, बड़ा था हम पर दुख ।। ८
अवगत करो पूतना की, काट डारो कुहाडा से।
ले जाओ जंगल में, जलाय देओ इने ।। ९
इन भांत इनकी गत, भई मुकत अपने ठौर।
कहों कबीला इनका, ज्यों मारे जाएंगे और ।। १०

श्री महामति कहे ऐ साथजी, एह तुमारी वीतक।
तुम थे इन लीला मिने, एह पेहेला ठौर बुजरक ।। ११

प्रकरण ५ चौपाई १७२

कृष्णाचर्चा

इत व्रज वीतक बोहोत है, संक्षेपे कहे सुकन ।
ए लीला तुमारी नजर आगे भई, याद आवे दिल मोमिन ।। १

सुन सखी राजकी बात कहूं सान की, मान दिल आन तूं देख ताईं ।
आज मोही राज मिले मारगमें, अंग उमंग करलई साईं ॥ २

मान गुमान दिल सम सुख संगमें, देखे अलेखे मुख कहत न आवै ।
रसभरी रहतमुखभाखीमैंसामसों,दीनवचनकहेसनमुख आवै ।। ३

कहे सखी कौन कारज मोहे सौंपत, पूरूं मनोरथ उपजे अंग ।
मै अधीन बस रहूं रे तुमारे, करूं अहेनिस तुमारडे संग ।। ४

जहां कहै ताहां आऊं तुम कारण, ध्यान धरूं उर आन सिंगार ।
मानरे मानिनी चित्त चौकस कर, मोही और न काम तुमारा विहार ।। ५

हंसी बात कही सामके सनमुख, जान आधार सब अपना अंग ।
मैं ले चली राजकों मंदिर अपने, रमी मिल शामसों काम के संग ।। ६

प्रफुल्लित बदन भये दोउनके, अबहीं पधारे मेरे द्वार आंगन ।
केती कहूँ इन सुख की वीतक, जानत सब आतम का मन ।। ७

सुख पायो उन सइयोंने सुनके, धन रे नार अवतार तेरो ।
जे ध्यान न आवे त्रिगुनके सुपने, धन कुलकामनी सुन सुकन मेरो ।। ८

श्री महामति कहे दोउ कान मुख जोडके, सुन वीतक सुख पायो अपार ।
यों बातें आपसमें करी, चल्यो जात योंकर वेहेवार ।। ९

प्रकरण ६ चौपाई १८१

व्रज वस्ती

अब कहों व्रज वसती की, पुरे बियालीस वास।
त्रालीसमा अंत्येजका, सब ठौरों राज करे विलास॥ १

वास वस्ती वसे घाटी, तीन खूनो गाम।
निकट जमुना घाट मध्ये, साम सइयां मिलै इस ठाम॥ २

तरफ दूसरी पुरे सारे, बीच वाट धेनका सेर।
इत खेले नंद नंदन, संग गोवालों के घेर॥ ३

पुरा पटेल सादूल का, वसत तरफ दूजी ए।
तरफ तीसरी वृषभानजी, वसें नाके तीनों ले॥ ४

नंदजी के पुरे सामा, दिस पूरवे जमुना तट।
छूटक छाहा वनसपती, वृक्ष आडी डाल वट॥ ५

सकल वन छाया भली, शोभित जमुना किनार।
अनेक रंगों बेलियां, फूल सुगंध शीतल सार॥ ६

तीन पुरे तीन मामा के, बैठी ठाठ वस्ती मिल।
आपे सूरे तीनों ही, रहे पुरे नंद के पाखल॥ ७

गांगा चांपा और जेता, मामा तीनों के नाम।
दछण दिस ओर पछिम दिस, वसें फिरते गाम॥ ८

नंदजी के आठ मंदिर, माडवें एक मंडान।
पिछवाड़े वाड़े गऊ के, तामें आथ सबे जान॥ ९

रेत झलके आंगने, दूध चरी चूला आगल।
आईजी इन ठौर बैठें, खेले सखियां मिल॥ १०

मंदिर मोदी तेजपाल का, इत चरी चूले पास।
कोईक दिन आए रहैं याको मथुरा में वास॥ ११

गहेरी वास वसती, तीन खुने गाम।
काठे पुरा टींबा पर, उप नंद का ए ठाम॥ १२

कहूँ कबीला नंदका, घर रानी जशोमती ।
मत जैसो होय इनको, सब सीस पर धरती ॥ १३

जब राज पधारे इन घर, तब रजा लखमी मांगी ।
मैं आगूं जाय व्रज में, करूं सेवा सबों अंगी ॥ १४

था सरदार व्रजका, पटेल जो लखमन ।
जब तिनने सफर किया, था बेटा कल्यान बालपन ॥ १५

मां जब तिनकी चली, अंत समे न निकसे प्रान ।
मैं सोंपों बेटा किनको, कोल कियो ऐसे मान ॥ १६

कोऊ कोऊ बतावै काहू कों, काहू काहू का लेवे नाम ।
इनके मन जशोदा चढी, रखै लड़का इनको काम ॥ १७

बोलाए नंद जशोमती, जेठे गोप बोलाए सब ।
तब उनने बातां कही, सबों सुनी एह तब ॥ १८

मेरा बेटा कल्याण जी, गोद डारत जशोमती के ।
जेठाई सब व्रजकी, इने सबे मिल दीजे ॥ १९

मेरे घरकी मता सब, और सबे चौपाए ।
सो नंदकों मैं सब दिया, दै कल्यान जी को पोहोंचाए ॥ २०

इतना वचन कहते ही, हुए मुगत प्रान ।
वारसी सब व्रज की, हुई नंदको प्रमान ॥ २१

यों बेटा कल्यानजी, पालक कह्यो ताए ।
भागवती बाई इस्त्री, घर वसत नंदके सदाए ॥ २२

वसुदेवे पोहोंचाई थी, जब कंसे किया जोर ।
तब भगाई रोहिणी, कछू न राख्या शोर ॥ २३

केतेक वरस वितीत भए, गरभ सात महीना भया उतपन ।
कछू ना मनमें ना चित्तमें, एह कैसा उतपात मेरे तन ॥ २४

रोहिणी डर खाय आई, जशोमती के पास ।
बात कहे सरम आवत, तुमे क्यों आवे विसवास ॥ २५

कहो बात जशोदा कहे, क्यों एता करत है डर ।
बात मेरे आगे करते, कछू संकोच ना करतूं ता पर ।। २६
तब रोहिणी ने कहा, मेरे उदर बालक भया सत ।
कछू तूं जानत है, कहे वचन जशोदा इत ।। २७
तब रोहिणी ने कहा, मुझे कछू ना खबर ।
बालक सात मासका, आया आज उदर ऊपर ।। २८
तब जशोदा अचरज पाय के, व्रज से बुलाय दाई ।
उन आगे कही सब हकीकत, तब उन एह राह बताई ।। २९
के तेरे गरभ कबूं सूका था, तब रोहिणी दिया जवाब ।
मेरे पहेला गरभ सूका था, मास तीन का उदर आय ।। ३०
तब उन दाई ने कहा, के बोहोतन कों फेर फलत ।
यों ही तुमकों भयो, कछू दोस न लगो इत ।। ३१
इन भांत शक भान के, जब भया मजकूर ।
रोहिणी के गरभ फेर पला, हुआ पूरन दस मास जहूर ।। ३२
ताको बालक उतपन, बलभद्र है वाको नाम ।
व्रज में ही बड़ा भया, रहे नंद के ठाम ।। ३३
जब कृष्णजी प्रगटे इत, रहे रमे व्रज में नित ।
जो सेवे ताको होवहीं, पूरे मनोरथ तित ।। ३४
मोदी तेजपाल रहे, बलोटे पूरे व्रजमें ।
जो चाहिये सो ल्यावही, घी लेवे मोल सब से ।। ३५
पूड़िया इनकी पड़ी रहे, नित भरे इन ठौर ।
पोठी भर ले जावही, जाय वेचन घर और ।। ३६
सामा तहां से भर ल्यावहीं, उतारे नंद के द्वार ।
एक घर रहने उनको दिया, रहे सेवा में खबरदार ।। ३७
मैं कृष्णजी के वास्ते, एह ल्याया वस्तर ।
बोलाओ दरजी एह सीवदे, जामा इजार इन पर ।। ३८

श्री महामति कहे ऐ मोमिनो, एह व्रजकी वीतक ।
तुमको कहूं नंद का, कबीला जो बुजरक ।। ३९

प्रकरण ७ चौपाई २२०

नंदजीके कबीले

अब कहूं नंद घर का, जो रहे कुटुंम परिवार ।
एक ठौर रसोई रहे, रहे लौकिक वेहेवार ।। १
कबीला वृषभान का, प्रभावती बाई नार ।
पुत्री श्री ठकुरानी जी, श्रीकृष्णजी भरतार ।। २
और पुत्र वृषभान का, कृष्णजी ताको नाम ।
बड़ा भाई सुदामा, ताको बेटा कल्यान स्याम ।। ३
ताकी नार कल्यान बाई, ताको पुत्र कल्यान ।
एह वृषभान का कबीला, कर दई ताकी पहेचान ।। ४
इन सात जने की, रसोई होवै एक ठौर ।
नित लीला होवै व्रज में, कहूं नंदके घरकी और ।। ५
नन्द घर दस जने की, नित रसोई होवे भोर ।
दस जने एक रसोई में, कहों नाम ताके ठौर ।। ६
गांगा चांपा और जेता, ए मामा कृष्णजी के नाम ।
जीवा रूपा बेनी दोए, रहे घर नंदके इस ठाम ।। ७
इत लीला नित्य होत है, सादूल पटेल के घर ।
तीत रूहें उतरी, राज पधारे तिन खातर ।। ८
रमे राज सबन सों, नित्याने सब ठौर ।
आवे दीदार को सब कोई, होने न पावे भोर ।। ९
पानी पंथ मारग में, सखी सैयन मिलाप होय ।
ए बातां करे श्री राजजी, आपस में सब कोय ।। १०
महामति कहे ऐ साथजी, ए नंद घर कबीला जान ।
आगे सइयां की वीतक, सुनो नेक कहूं पहेचान ।। ११

प्रकरण ८ चौपाई २३१

प्रेम सेवा

कहूं सइयां सेवे राज को, व्रज में रहे सबन ।
सरवस सौंप्या अपना, दे धन तन और मन ॥ १
इन व्रज सुन्दरी ने, पानी ओराती को चढों बरेडे ।
ताकी विध कहत हों, सुनो वीतक मोमिन ए ॥ २
नित सैयों के दिल में, वसे राजके चरण ।
कबूं सरूप न उतरे दिल से, रहे आठों जाम मगन ॥ ३
चितवनी लई दिल में, मैं मिलने जाऊं राज ।
जिन कोई मोहे बरजही, एह कर जाऊं काज ॥ ४
सो मैं काज पहेले करूं, जो मेरे घर में होए ।
जिन सासू मोहे बरजही, काम आडे देवे सोए ॥ ५
रात पीछली घड़ी छ को, उठे सेजसे आप ।
एह आटे मोंहे पीसना, वास्ते राजसे करने मिलाप ॥ ६
करने लागी दधि मंथन को, और रसोई को साज ।
और टेहेल सब घरकी, अब कछू ना रह्या बाकी काज ॥ ७
तब जाए उठाई सासको, दातोंन पानी लाई आगे ।
पूछन लागी सास कों, मैं करूं टेहेल बताओ ए ॥ ८
तब कहा उन सखीने, सब घरका काम हुआ तैयार ।
पीरसना रसोई बिलोना, गाय दोहन मैं किया वेहबार ॥ ९
दुध अवटाने धरा चूले पर, और छाना थापने का किया काम ।
वासीदा घरका कर चुकी, खाना छीके धरे बनाके ठाम ॥ १०
सुन सास वचन बहू के, सब रात एही किया काम ।
बड़ा अचरज होत है मुझको, कछू रात सोवत ना ए ठाम ॥ ११
तब कहे मैं अब ही उठी, सब लियो काम संवार ।
सास जाने मैं क्या करों, पावे अन्तर बडा करार ॥ १२

दिल सास अति सुख पावही, मैं वार डारूं इन पर ।
इन मेंरा अंतर ठारया, आए धन भाग इन घर ॥ १३
प्राण निछावर करूं मैं, धन मात पिता तें नार ।
धन भाग बडें हमारे, ऐसो घरको उठायो भार ॥ १४
सास जाने कौन बात में, याको राजी होवे मन ।
सो इनसों मैं कहों, मो पर सिफत करे रोसन ॥ १५
अपने भरतार के आगे, अस्तुत कहे सुनावे कान ।
कहा कहों इन बहू की, हमकों कछू ना पहेचान ॥ १६
राजी होत ए नंदके द्वारने, जाय मिलो तुम सैयों संग ।
दई आसीस सब मुखतें, ना ठरे हमारे अंग ॥ १७
वृद्ध गए बैठे चौरे, यों अस्तुत करे सब ।
आप अपने घर बहू की, सब सुन सुख पावें तब ॥ १८
सब जाने ए हम सेवें, पर इनका चित्त एक ठौर ।
ए नंद नंदन सेवही, ना पहोंचे सेवा काहू और ॥ १९
किस वास्ते एह सेवत, मेरे जाना करने दीदार ।
तित जिन कोई काम आड़े पड़े, मैं सेवों अपनो भरतार ॥ २०
तिस वास्ते सब कामका, सेवा पोहोंचत श्री राज ।
करें टहेल माया की, सो सेवा होत सब काज ॥ २१
श्री महामति कहे ऐ मोमिनों, ए बीतक पेहेला तकरार ।
अब ज्यों रमी राजसों, याद करों परवरदिगार ॥ २२

प्रकरण ९ चौपाई २५३

सखियोंका शृंगार

साजूं सिनगारो मैं राज के कारने, काम फारग भई माया के जाल ।
जाऊं मैं दीदार के कारन, अंग उलसै मन खुसाल ॥ १
कांकसी सिर पर सेंथे सजे, मांग सिंदूरे समारत नैन ।
ले दरपन मुख देखत अपना, मांगे मुख और भूषन कहे बैन ॥ २

हार सिंगार भूषन सजे सुंदरी, करने झाल झलके अंग नूर ।
श्याम चोली कस कसती अंग पर, हार ऊपर मणि जहूर ॥ ३
साड़ी रंग सेंदूरिये शोभती, सबज चरनियां अतलस ।
सतलडी चीण दोऊं कंठमें, माला मुगताफल सोहे सरस ॥ ४
चंपकली उर ऊपर शोभती, बाजू बंध लटके फुमक ।
कोनी आगे कंकरनी झलकत, राज सिनगारका बड़ा रसिक ॥ ५
चूड़ जड़ाव चढ़त नंग रोशन, पोहोंची जड़ावनार हो हाथके माग ।
अंगुरी दस वींटी जड़ावकी, रमे राज के संग एही बड़ा भाग ॥ ६
चरन भूषन चारों बाजता, बीछूड़ा अनवट करे ठमकार ।
वेणा चोक शोभित भाल पर, चित्त चितवन करे मन विहार ॥ ७
साज सिनगार घूंघट खैंचके, क्यों राज बिना कोई देखे और ।
सिफत कुलबधूकरे सब देखके, ए पोहोंचे सेवा सब राज के ठौर ॥ ८
कहे श्री महामति चली नंदके द्वारने, जहां टोले मिले सैयां सब साथ ।
राजें आती देखी कामनी, दौड़ मिले उर अंग धरे हाथ से बाथ ॥ ९

प्रकरण १० चौपाई २६२

श्री कृष्णजीकी बाल लीला

जशोदा के द्वारने, प्रातः आवे सब साथ ।
राहमें एक दूजी मिले, मुख देख चले गहि हाथ ॥ १
राह मिने बातां करे, कल मोसुं न बोले राज ।
मैं दलगीर होए पीछी फिरी, मुझसे होए ना ग्रह काज ॥ २
मैं संझाको मारग में खड़ी, मोहे दूर से देखी दलगीर ।
तब मेरे द्वार आगे खड़े, देख नैनों ढरे नीर ॥ ३
मोसों बोलाए बातां करी, क्यों सोच करत मन दुख ।
कछू भूल ना भई मुझसे, हम बात कर पाया सुख ॥ ४

श्री महामति कहे आपसमें, कर बातां पहोंची द्वार।
तहां सइयां सब ठाडी रहे, मिल बातां करें विहार ।। ५

प्रकरण ११ चौपाई २६७

घर घर व्रज के मंदिरों, राजकों फिरने का काम।
कोऊ मिस काहूं घरों, गया चाहिए उस ठाम ।। १
कोऊ नंदके द्वारने, आए ना सके जब।
जरूर ताके द्वारने, राजको जाना तब ।। २
एह तो चलन मूल धामको, इनोंका हैं अंकूर।
ए दोऊ रहे ना सके, बिना किए मजकूर ।। ३
ले लड़के खेलनको, जाए द्वार खड़े तिनके।
अरी मोहे तृषा लगी, सखी लोटा जल भर ल्यावे ए ।। ४
जल पान के वास्ते, तासों नैनों नैन मिलाए।
जहां लग जल पीवत, पलक ना मारी जाए ।। ५
एह सुन्दरता प्रेमकी, अंदर रूह भई एक।
सो जुदागी ना सहे, जो पड़े विघन अनेक ।। ६
श्रीमहामति कहे ऐ साथजी, हंस चले नंदलाल।
सखीको सुख उपजायके, रहे आठों पोहोर इन हाल ।। ७

प्रकरण १२ चौपाई २७४

खेलत गोवालों संग, पुरे पुरे व्रज में।
रहे अपनी वयके बालक, हंसे खेले उनसे ।। १
तिनके बोलावन कों, जाए निकसे उन घर।
कहां बेटा तेरा रहे, आज न आया क्यों कर ।। २
निकसी गोआलन घरसें, आई खड़ी भई आंगन।
सैयाँ आय अपने, दिल होय खुसाल मगन ।। ३

लगियां बांता करने, क्यों राज पधारे इत ।
मैं तो आया बोलावने, सखा कों इन बखत ।। ४
चले आए बोलावने, सैयों के सुख काज ।
हंस हंस बातां करे, एक दूजी मिलके राज ।। ५
श्री महामति कहे ऐ साथजी, कर वायदा चले सैयन ।
काल मन्दिर तेरे आऊंगा, रहियो तुम मगन ।। ६

प्रकरण १३ चौपाई २८०

फेर राज तितथे चले, याद किया घर और ।
अरी यार फलाना काहां हैं, चलें जइए इनके ठौर ।। १
घेर गौवालों संग चले, हाथमें छडी लई लाल ।
हांस विनोद रमते फिरे, सब मगन हाल खुशाल ।। २
राह बीच सखी मिली, तासों नैनों नैन मिलाए ।
नैनों बात करत हैं, आतम चित में ल्याए मिलाए ।। ३
इसारत सों दोऊ मिले, आतम होय गई एक ।
इन समे की चितवन, वारों कोट छबि अनेक ।। ४
यों सुख सैयां राजसूं, पल पल लेत हैं नित ।
तहां सेंती आगे चले, आगे मिली सैयां इत ।। ५
श्री महामति कहे सखी देखके, गए और के मन्दिर ।
पूछा अंदर जाएके, सखी नाम ले कर ।। ६

प्रकरण १४ चौपाई २८६

वसंत पंचमी

मास माहा सुदि पंचमी, पूजहीं पंचमी पूजही ।
घर घर आनंद औध, न और सूझ ही ना और सूझ ही ।। १
कामकी केल करै, संग कान्ह के कामिनी ।
अंग उमंग न मावत, यों जात भामिनी ।। २

भोर भयो भई भामिनी, साम सोहाग की।
बातां लागी करने, सइयों सौभाग की ॥ ३
चलो जइए नंद के द्वारने, मिलके माननी।
लाल गुलाल सों छांटे, सबे मिल भामनी ॥ ४
चूआ चंदन अबीर, मगाओ मोल के।
देंगे सबे मिल द्रव, हमारो कोल के ॥ ५
तहां लगे सैयर, साथ मिलाओ एकठे।
हममें कौन है आगे, होए चले जेठ के ॥ ६
श्यामाजी जाय बोलाये, पुरे वृषभान के।
लावै बोलायके बातां करैं, सब मिल शान के ॥ ७
और बोलाये पुकारो, पुरे सबों ठौर के।
वेगे पोहोंचे हम, जात हैं बडी भोर के ॥ ८
कोऊ मृदंग झांझ, डफ बाजे ल्यावहीं।
धुन मृदंग अनंग, बधाई भावहीं ॥ ९
साज सिनगार संवार, चली व्रज नागरी।
जोवन रूप अनूप, है गुनकी आगरी ॥ १०
चित्त चितवन खेलको, भाव ले भोर को।
जाय रमे राजसों, नंद के पौर को ॥ ११
पाउं में भूषण झांझरी, अनवट घूंघरी।
बाजत धुन सुहामनी, राजत आगरी ॥ १२
चाल चले गज गामिनी, भामिनी भावती।
सुंदर छब छबीले के, उर में राजती ॥ १३
खेलत नंद के द्वार, सुनी धुन साम से।
सब दौड़े बाल गोपाल, पूरन काम से ॥ १४
देखी सखी व्रज बाल, खुशाली खेल से।
लगी नैनों से नैन मिलाए, गुलाल की रेल से ॥ १५

चुआ चंदन अबीर, उड़ावै गुलाल ही।
घेर धर्सीं अंग लगावत, नन्द के लाल ही ॥ १६
ले श्यामकों स्याम के, सीस धरावत हाथ ही।
चलीं घेर सभी व्रज नार, श्याम के साथ ही ॥ १७
हो हो होरी सबद, बोले बोल सोहमना।
कोऊ जुगल सरूप के, ले मुख भामना ॥ १८
देखत ही सुख केल, कह्यो ना जावहीं।
कोऊ हांसी के बोल, सोहामने ल्यावहीं ॥ १९
कोऊ झोली भर गुलाल, दोऊको देवही।
जुगल स्वरूप सोहामने, हाथ सों लेवहीं ॥ २०
छिड़कत श्यामाजी श्यामसों, सनमुख मांग ही।
मानूं चलावत जोर के, जुद्ध में सांग ही ॥ २१
चारों तरफों घेर, लिए घनश्याम को।
फगुवा मांगत मानिनी, लै लै नाम कों ॥ २२
श्री महामति हंसे व्रजराज, कहे के बोल ही।
हाछ छुटकाय चले, दे अपना कौल ही ॥ २३

प्रकरण १५ चौपाई ३०९

श्रीमद्भागवतमें वर्णित व्रजलीला

यों व्रजलीला अनेक है, मैं संक्षेप कहे सुकन।
उनतीस अध्याय लीला भई, मुख्य ताके कहूं वचन ॥ १
प्रथम जो अध्याय मिने, कंसे सुनी आकाशवान।
मेरी मृत्यु है इन से, छ बालक मारे की पेहेचान ॥ २
दूसरे अध्याय मिने कही, देवकी से विष्णु की उतपन।
ब्रह्मा गरभ की अस्तुत करी, प्रबोध देवकी को मन ॥ ३

तीसरे अध्याय मिने, होय निज सरूप अवतार ।
देवकी वसुदेव अस्तुत करैं, पोहोंचाया साम नंद के द्वार ॥ ४
चौथे अध्यायमें कंस को, चंडिका कहे वचन ।
कंसे दुष्ट मंत्री बोलायके, बालक वध करो तिन ॥ ५
करी क्रिया पांचमें जात कर्मकी, नंद मथुरा जाए ।
वसुदेव सों मिलाप कर, सिखापन सुनी बनाए ॥ ६
छठे अध्याय मिने, वसुदेव कहा आगम ।
नंद जाओ गोकुल, वध पूतना देखी आतम ॥ ७
सातमें अध्याय मिने, सकटासुर तृणावर्त ।
मुखमें विश्व देखाइया, माटी खाते माता को जित ॥ ८
आठमें अध्याय मिने, गरगाचारज कहे नाम ।
कृष्णजीए बालकी करी, मृत्तिका खाई इन ठाम ॥ ९
नौमें अध्याय मिने कही, दूध गया उभराय ।
जशोदा को रीस भई, साम बांधने का करै उपाय ॥ १०
दसमें में दोय वृक्ष, उखडे यमला अरजन ।
तिनोंने अस्तुत करी, सो देखी सबों रोसन ॥ ११
अग्यारमें अध्याय मिने, बालक खेलन गये वृन्दावन ।
वत्सासुर बकासुर, किया बध जो तिन ॥ १२
बारमें अध्याय मिने, अघासुर को वध जान ।
ब्रह्मा परीछा लेने को, कही ए मोंको पेहेचान ॥ १३
तेरमें अध्याय मिने कही, कियो ब्रह्मा वछाहरन ।
ततछिन नए बनाएके, ले गये व्रज वतन ॥ १४
और बालक वच्छ, आप भये सबन ।
एक बरसलों यों रहे, पहिचान न हुई किन ॥ १५
चौदमें अध्यायमें, होय मोहित ग्रहे कदम ।
बड़ी अस्तुत करके, सौंप चला आतम ॥ १६

पनरमें अध्याय मिने, धेन पालन को काम ।
धेनुक दैत्य को मारना, ताल वन के ठाम ॥ १७
और कालीको दमन, निरत करी ऊपर फनन ।
गोपन की रक्षा करी, बचाये विष जल तिन ॥ १८
सोले काली नाथ्यो जल में, करी अस्तुत नाग पतनी ।
साम ने अनुग्रह कियो, सेवक जान अपनी ॥ १९
सत्रमें अध्याय मिने, काली पठाया दीप रमनक ।
गोपन को बोध कियो, देखाय साहेबी बुजरक ॥ २०
अठारमें अध्या मिने, तब रूत थी ग्रीषम ।
तामें देखाई वसन्त, सुख पायो सब आतम ॥ २१
उनईसमें अध्याय मिने, बलभद्र से मरवायो ।
प्रलंब दैत्य को वध, एह कारज करवायो ॥ २२
जब लगी दावानल वनमें, रक्षा करी गोप गायन ।
दावानल को पान कर, रक्षा करी सबन ॥ २३
बीसमें अध्याय मिने, वरषा अंतकाल शरद ।
ताको वरनन कियो, सिफत करी जोलों हद ॥ २४
वरषाकाल में क्रीड़ा कर, बलभद्र कृष्ण गोप सुख ।
आनन्द पायो तिन समे, छूट गए सब दुख ॥ २५
एक बीसमें अध्याय मिने, वेणु गीत वरनन ।
कृष्णजी गये वृन्दावन, सखी कहे विरह वचन ॥ २६
बाईसमें अध्याय मिने, गोपियन के हरे वस्तर ।
वरदान तिनकों दियो, यज्ञशाला गये ततपर ॥ २७
तहां जाए अंन्न जाचया, ए कहे अध्याय तेईसमे ।
फेर जाय ऋषि पतनीपे, होय इनों पर अनुग्रह इनसे ॥ २८
तिनके गुरवर को, पछताव करायो ।
उन अपनी इस्त्रीयोंको, घरों आए सरायो ॥ २९

पूरे मनोरथ तिनके, जिन राखो पत से डर ।
ऋषि तुमारे चरन वंदे, करे छाहा तुम ऊपर ॥ ३०
चौबीस में अध्याय मिने, ले शास्त्र मीमांसा मत ।
इंद्र यज्ञ दूर करके, गोवर्धन यज्ञ कराया इत ॥ ३१
पचीसमें अध्याय मिने, इंद्र कियो अति कोप ।
व्रजको नाश करने, मिटाय देऊं सब गोप ॥ ३२
तब गोवरधन उठाय के, राख लियो गोकल ।
इंद्र को मान घटाय के, भई रक्षा बाल गोपाल सकल ॥ ३३
कछू न चला इंद्रका, आया डरके शरन ।
आगे कामधेनु करके, ग्रहे सामके चरन ॥ ३४
छबीसमें अध्याय मिने, अद्भुत देखे करम ।
विस्मय सबे गोप भये, कछू न पाया मरम ॥ ३५
तब नंदने गोपको, कहे गरग वचन ।
नारायण तुल होयगा, ए सबमें किये रोशन ॥ ३६
सत्ताईसमें अध्याय मिने, कृष्ण प्रतिज्ञा जान ।
अभिषेक को ओछब करो, इंद्र कामधेनु कियो सनमान ॥ ३७
अठाईसमें अध्याय मिने, नन्द गया करने अस्नान ।
तहां से वरुनके दूत ले गए, ताय हुती ना पेहेचान ॥ ३८
तहां सेती छोडाय के, जब ल्याए बाहेर ।
तब नंद जो देखया, सब किया गोप आगूं जाहिर ॥ ३९
तब गोप ने मागिया, देखाओ अपनों ठौर ।
जहां बैकुठ में रहत हो, ताकी तलब कर जोर ॥ ४०
तब बैकुंठ देखाया, गोपनको तमाम ।
देख गोप पीछे हटे, हम जाए अपने ठाम ॥ ४१
इहां तो तुमसे बोलने, रहे ना हमारी मरजाद ।
जहां तुमसों बात करें, सोई देखाओ हमारी बुनियाद ॥ ४२

उनतीसमें अध्याय मिने, होय शरद रुत पूनम दिन ।
उदय भयो शशांक, कलंक रहित रोशन ।। ४३
श्री महामति कहे ऐ साथजी, ए कही व्रज वीतक ।
अब कहूं वृन्दावन की, जो पंच अध्यायी बुजरक ।। ४४

प्रकरण १६ चौपाई ३५३

इति व्रज लीला

अथ रास लीला

(श्रीकृष्णका वृन्दावन प्रवेश तथा सिनगार)

पहेले कही दिन हक ठौर की, जो खिलवत का मजकूर ।
रूहें रबद कर उतरी, ताको कह्यो जहूर ।। १

कहे छे दिन वाके भये, बीच अल्ला कलाम ।
तामे एक दिन कह्यो व्रज कों, दूजो दिन रास कह्यो इस ठाम ।। २

तीसरा दिन महंमद, चौथे दिन ईसा इस ठाम ।
पांचमां दिन इमाम का, छठे दिन जुमा तमाम ।। ३

अब कहों लीला रास की, जो कह्या दूसरा दिन ।
ताके पांच अध्याय कहे, सुक सुकनों किए रोशन ।। ४

व्रज में अग्यारे वरस, ऊपर भये बावन दिन ।
ता पीछे गऊ चारने, पोहोंचे वृंदावन ।। ५

विचित्र वेष बनाय के, बनी वनमाला उर ऊपर ।
विचित्र धात चित अंगपर, वेष रूप अनूप नटवर ।। ६

सिर पर मुकुट सोहामनो, बानायो अपने हाथ ।
गुवालों को हुकम किया, जो थे अपने साथ ।। ७

संझा समे जब भयो, गऊ पीछे फेरी सब ।
कह्या आगेके गुवालको, मैं पीछे रहों अब ।। ८

जो पीछे रहे तिनसों, यों कर कहा सुकन ।
मैं तो आगे जात हों, मोहे ढूंढियो न कोई जन ।। ९

एक तरफ रहे गए, चले जात ताय के दोए ।
खबर न पड़ी काहूं को, इत गोप न जाने कोए ।। १०

पूरनमा को पूरन, प्राची दिसथें होए।
उगा षोडश कलाले, कलंक न इनको कोए ॥ ११
मूल सरूपें देख्या, संग सइयों के मन।
इनको कछू खबर नहीं, कछुक करों चेतन ॥ १२
यों करते आग्या भई, अक्षर के ऊपर।
आधी नींद होवही, जोगमाया इन पर ॥ १३
पेहेले भई सरूप पर, कराए जोगमाया सिनगार।
बस्तर भूषन इनोंपे, सब चेतन भये प्रकार ॥ १४
मुगट मोर पीछका, ताकी करना लगीं आसमान।
जोत न काहू मावही, करन फूल झलकत कान ॥ १५
जब मुखारविंद फेरत, जोत मुकुट फिरे ब्रह्मांड।
लरैं किरना साम-सामी, एही नया जोगमायाका इंड ॥ १६
वय किशोर अति सुंदर, हरवटी हंसत मुख गौर।
अंग अंग छबि राजत, सोभा सबदातीत है जोर ॥ १७
पीतांबर पट पेहेरन के, रंग लाल इजार।
पटका कसा कंमर, करने रास विहार ॥ १८
पटका चौकड़ी उर पर, और चौकड़ी वासे।
दोऊ बाजू छेडे लटकत, शोभा कही न जाए इन में ॥ १९
पांचों हार जवेर के, उर ऊपर झलकत।
दोऊ बांहों बाजू बंध, चारों फुमक लटकत ॥ २०
पोहोंची जुगत जड़ाव की, कांडे कडली कंचन।
बींटी नंग जवेर की, झलकत नूर रोशन ॥ २१
चारों भूषण चरन के, स्वर बाजत मीठा रसाल।
सब साज चेतन देख के, हुए अतंत खुशाल ॥ २२
भोम द्रुम वृक्ष वेलियां, देखी चेतन जोत अपार।
तब याद किया सखियनको, करने को रास विहार ॥ २३

करी आज्ञा जोगमाया को, सखियां लाओ बोलाए ।
अब विरह सहे ना सकों, सिताब देओ पोहोंचाए ॥ २४
सह ना सके भए आतुर, व्रहे सह्यो न जाए मोमिन ।
त्रुटिकाल जुगन के अयुत भए, हुआ ऐसा आतुर मन ॥ २५
तब मुरली लेकर धरी, अधुरों लगाय स्वर गाए ।
तब व्रजमें स्वर पोहोंचिया, तब सैयां निकसीं धाए ॥ २६
पेहिले तामसी चली, ताय आड़ो ना आयो संसार ।
राजसियां पीछे चली, भयो आड़ो स्वांतसियों कुटुम परिवार ॥ २७
तो आकार इनों छोड़िया, ए उन आगूं दोडी जाए ।
राहमें जोगमाया मिली, करी खंडनी आप पर बनाए ॥ २८
कछू ना टहेल मुझसों भई, मैं आई इनों को बोलावन ।
ए आगूंसे निकसी, ए प्रेम इसक राज मगन ॥ २९
कोई आकार रहित थीं, ताके नए किए आकार ।
वय एक किसोर सबकी कर, कराए चेतन सिनगार ॥ ३०
श्री महामति कहे ए साथजी, एह वीतक दूसरा दिन ।
ताकी विध लेयके, दिल को करो रोसन ॥ ३१

प्रकरण १ चौपाई ३१

वृन्दावनकी शोभा

अब शुक वचन से कहूं, जो पांचों अध्याय में रमन ।
ले शास्त्र साख संक्षेप से, समझेंगे मरम मोमिन ॥ १
जो रमे हैं रासमें, ताको आवे याद ।
मूल वचन देखाइया, इत मोमिन पावे स्वाद ॥ २
भगवानपि ता रात्री, हुई प्रफुल्लित सरद रुत ।
देख वन फूले चेतन को, जोगमया उपसी इत ॥ ३

ता पद जो कह्यो रातको, सो चार रातों की सरदार ।
एक रात मृत लोककी, ताको सुनो विचार ।। ४
सोतो चारे पोहोर मृतलोक के, और दूजी देवन की रात ।
सो छ महीने मृतलोक के, आगे तीसरी रातको सुनो जात ।। ५
जो रात्री ब्रह्माजीयकी, हजार चौकड़ी की होए ।
चौथी रात नारायणकी, नाहीं निरमान कह्यो सोए ।। ६
रासकी रात इन ऊपर भई, ए चारों इनके दरमियान ।
कदी नारायण अपनी रातका, निरमान कहे पहिचान ।। ७
पर रास की रातको निरमान, करना सके कोए ।
सोतो मृत लोकमें भई, बिन मोमिन न कादर होए ।। ८
ता समेकी सुनो मोमिनों, उदय सोल कला शशि जान ।
राजा उडु नक्षत्र का, ककुभ प्राची दिस पहिचान ।। ९
लालक से लेपन करी, प्राची दिस परवान ।
किरना अपनी पसारके, लालक सीतल जान ।। १०
आया आनंद दिस को, सचरषणी सर्वत्र जान ।
ताको मोद ऐसो भयो, कही न जाए पेहेचान ।। ११
द्रस्टांत देत ता ऊपर, ज्यों एक विरहन नार ।
दीरघ कालों आईया, जब मिले तिन भरतार ।। १२
ताय आनंद अति होत है, त्यों दिसें भई सुखकार ।
और कुमुदनी वनसपती, सब कमल फूलनहार ।। १३
अखंड मंडल चंद्रमा, रस सींचत सब वन ।
है भरतार वृखवेलियों, ताकों देखत प्रफुल्लित मन ।। १४
रमा लछमी बैकुंठ में, जो भगवान की अरधांग ।
मानो मुख है तिनका, था सनमंध भ्राता संग ।। १५
गो-किरना कही तिनकी, अति शोभित तिनसे वन ।
ताको देख वेण बजायो, सखियों के मन हरन ।। १६

तामें गान ऐसो कियो, अनंग वृद्ध करने काम ।
हर लिये मन व्रज सुन्दरी, वृन्दावन ठाढ़े हैं साम ॥ १७
अपनो उद्यम चलनको, कोई न लखायो किन ।
जहां कंत खड़ा अपना, लटके कुंडल वेग चलत तिन ॥ १८
कोई गाय दोहन करै, छूट गया दोहन हाथ ।
कोई दूध अवटावती, सो छोड चली ताको साथ ॥ १९
मन उदवेगन हो रही, सुनते वेणुं कानन ।
ए तामसियां पहिले चली, चली राजसियां दिल रोशन ॥ २०
कोई भरतार को पीरसती, कोई बाल करावे पय पान ।
कोई पत की सेवा मिने, छोड ते कछू ना रही पेहेचान ॥ २१
कोई जिमने के समे, कोई जल करती पान ।
कोई भोजन भरतार को, छोड़ते कछू ना रही सान ॥ २२
कोई नहाय अंग लेपना करे, कोई पोंछत तन ।
कोई नैन समारतीं, देत एक आंख अंजन ॥ २३
कोई बस्तर पेहेनती, कोई भूषन पाउंके पेहेनती कान ।
शान न रही शरीर की, जाते निकट कृष्ण सनमान ॥ २४
ताय पति मने करने लगे, पुत्र भ्रात कुटुंब परवार ।
जाकी हरी आतमा सामने, सो क्यों फिरे इन विहार ॥ २५
स्वातसी गृह में रही गई, निकसने न पावें ठौर ।
भाव सरूप रूदे धर, चित में न आया और ॥ २६
ध्यान किया मीच लोचन, रह्या सरूप हिरदे भराए ।
मंगल तिन तिन भए, असुभ विरहे ताप से गया नसाए ॥ २७
प्रीतम विरह ना सही सकीं, इनकी पोहोंची पर आतम ।
जार बुध उप संग से, छूट गया आकार का दम ॥ २८
सुभ असुभ दोऊ गले, सब आगे भई प्रापत ।
जोगमाया सिंगार कराए, जाए पोहोंची हजूर तित ॥ २९

श्री महामति कहे ऐ साथजी, सुनो पाउ भरे तुम ।
कहूं आगे तुमारी वीतक, जो देखाया हक हुकम ।। ३०

प्रकरण २ चौपाई ६१

राजा परीक्षितका प्रश्न

इत राजाने प्रश्न कियो, ए मुनि सुकदेव।
क्यों गोपी पोहोंची निरगुनको, सोए कहो मोहे भेव ।। १
कृष्णजी को एक रमण, जान्यो परमकांत शोभायमान ।
न जान्यो ब्रह्म अद्वैतकी, याको कछू न थी पेहेचान ।। २
और गुन प्रवाह संसारमें, रहे संसार गृहस्थाश्रम ।
ए कछू न जानती, पहिचान जो आतम ।। ३
तो इनको क्यों प्रापत भई, वस्त जो निरगुन ।
क्यों अंधेर मिटे आतम, दिलको करो रोशन ।। ४
तब शुकदेवे कह्या, एह तो मैं पेहेले ही कहे वचन ।
चैद्य जो शिशुपालको, देख्या दुसमन मन ।। ५
उने न चाही मुगत, थी दुसमनी दिल दरमियान ।
ताको मुगत ऐसी दई, ना तप जोग ना ग्यान ।। ६
सोए मुगत दई तिनको, बिन चाहे बिन पेहेचान ।
इनमें तो आठों पोहोर, था रमन सुख उपमान ।। ७
ऐसे सिसपालको उधारो, एह मैं कह्यो सप्तम स्कंध में ।
ए तो प्रीत सामकी, औरों प्रापत होय इनसे ।। ८
जेते कोई आदमी, तिन सबनका उद्धार ।
सुनते ही मुगत होवही, इनोंको नित विहार ।। ९
निदान तेरो नाम राजा, तो तोकों रजोगुन अधिकार ।
ना निरमान है बलको, जिन जानो ए सगुण आकार ।। १०

इनके देह है निरगुन, इनको निरगुन वेहेवार ।
सब करतूत माया निरगुन, ए सब्दातीत के पार ॥ ११
ए सरूप ऐसा है सामका, कोई याकों भजे होए काम ।
कोई क्रोध कर भजे, कोए भय कर भजे इस ठाम ॥ १२
कोई सनेह कर सेवही, कोऊ एकता कर एक ।
कोऊ सुहृद पने भजे, कोऊ और भावे अनेक ॥ १३
यों नित जो कोऊ भजे, ताको ते निमित्त प्रापत होए ।
तो कौन अचरज इनका, इत सक न रही कोए ॥ १४
तामे राजा तू भगवदी, तोकों न चाहिए सक ।
इन तेरी रक्षा करी, पैठ गरभ बुजरक ॥ १५
ए तो जोगेस्वरों का ईस है, एह है ताको ईस्वर ।
कोई ना पोहोंचे इनकों, याकी साहेबी सब ऊपर ॥ १६
जिनकी दृष्टि से ऐसे कई, हाथों कर बताया इंड ।
सो सारा अखंड भया, त्रिगुन समेत ब्रह्मांड ॥ १७
ताके निकट आय पोहोंची, व्रज योषिता भगवान ।
बोलनवालों में बोलका, कहे मुख मीठी बान ॥ १८
श्री महामति कहे ए साथजी, कहों उथला के वचन ।
तुमारी परीछा लेने को, कहे मोहित वचन रोसन ॥ १९

प्रकरण ३ चौपाई ८०

सखियोंको श्री कृष्णका उपदेश

आय सैयां पोहोंची राज के, मिल सैयों लिया घेर ।
राजे देख सुख पाया, कहे वचन मुख फेर ॥ १
देखन को परीछा, जिन माया होवे लेस ।
याद देने सैयन कों, क्यों छोड़े अपने रवेस ॥ २

ऐसा दिल में लेअके, वचन कहे श्रीमुख।
महाभाग्य कहे बुलाए, भले चल आई सनमुख ॥ ३
कहो कारज तुमारो, है कुशल व्रज में।
हकीकत मुझको कहो, आई कौन प्रयोजन से ॥ ४
घोर रूप एह रात है, रहे घोर जीव बीच वन।
तिस वास्ते पीछे फिरो, तुम बड़ी कुलबधू जन ॥ ५
तुमारे माता पिता, और कुटुंम परिवार।
सब ढूंढ़त है तुमको, ताको करो मनुहार ॥ ६
तिनसों हठ न कीजिए, जो कदी देखन आइयां वन।
राकेस कर सोभित, जमुना उजल जल रोशन ॥ ७
वन देखो सोहामनो, फूल सुगंध शीतल सार।
पात फूल फल चेतन, देखो जोगमाया विस्तार ॥ ८
अब रात बोहोत जात है, सती सेवे पति जान।
तुमारे वच्छ बालक रोवत, ताए सेवो पती जान ॥ ९
अथवा मेरे सनेह की, आई जंत्री तुम।
आंई भले पालो परिवार, तुम मानो मेरा हुकम ॥ १०
अथवा मेरे सनेह की, आंई जंत्री तुम इत।
कुटुंब को पोषन करो, जाओ घरों तित ॥ ११
परम धरम स्त्रीअनको, सेवे पति सनमुख।
तुम बधु हो कल्याणी, है तुमारो प्रजा पोषणमें सुख ॥ १२
दुशील दुरभागी होए, वृद्ध जड़ रोगी अपार।
पतिव्रता छोड़े नहीं, ऐसा होय पति भरतार ॥ १३
तासे स्वरग न होवे प्रापत, फल थोड़ा भए बोहोत होए।
जगमें निंदा सब करे, ऐसा करे ना कुलबधू कोए ॥ १४
मेरा स्त्रवन दरसन, और करे जो मेरो ध्यान।
नहीं निकट मेरे तैसा, सुख सब है मिने पहिचान ॥ १५

तिस वास्ते तुम सब, फिर जाओ अपने घर ।
उतही ध्यान सुमरन करो, रहो भजन मेरे में ततपर ।। १६
एह वचन शुकदेव ने, राजा को सुनाए कान ।
सुन सुकन भगवानके, दुख पायो मेर समान ।। १७
श्री महामति कहे ए साथजी, ऐसे वचन सुनाए कान ।
ताको उत्तर तुम दियो, करो ताकी पेहेचान ।। १८

प्रकरण ४ चौपाई ९८

गोपियोंकी अवस्था

अब कहों वचन सैयन के, जो उत्तर दियो तुम ।
सो सुकन याद करो, जो देखाया तुमे हुकम ।। १
सुकजी राजा सों कहे, अप्रिय सुने वचन ।
गोविंद मुख गोपीयने, भए भग्न संकलप मन ।। २
दुरत्य चिंता भई, याको तर ना सके कोए ।
सखी सात्विक मूरछित भई, तलफ राजसियों होए ।। ३
तामसियां सामे भई, पेहेले किए वसुधा मुख ।
स्वांसोस्वांस लेने लगी, लाल अधुर स्फुर पायो दुख ।। ४
चरन अंगूठे कर, लगीं भोम लिखने ।
दोऊ धारों नैनों आंसू झरे, दोऊ तरफों चले तिने ।। ५
खुशबोय अरगजा चंदन, भीग चले सब ठौर ।
लगियां छेड़े पोंछने, फेर स्वांसो स्वांस ले और ।। ६
कछू रुदन कछू पोछत, कछू बोल ना सके मुख ।
एक मही सखी बोलनको, हुई राजसों सनमुख ।। ७
बड़ो कुलाहल इन समे, हुओ साथ में तब ।
मने करत छानी रहीं, सखीए वचन कहे जब ।। ८

सुनो सैया एक मैं कहूं, है अपनी तकसीर।
क्यों ना राज ऐसा कहे, अपन पोहोंचे ना राज तीर ।। ९
राज आए प्रात से संझालों, आपन रहे बीच घर।
सो भी बोलाए लई अपनको, भूल मानो सबे इन पर ।। १०
शुकजी राजासों कहे, सिफत व्रजबधू के नाम।
श्रीकृष्णाजीके अरथे, छोड़े सब अपने काम ।। ११
रूदन करे आंसू पोंछे, गदगद कंठ कहे वान।
सनेह पूर्वक सुकन, है प्रेमे सरूप निदान ।। १२
श्री महामति कहे ए साथजी, ए रासमें कहे सुकन।
याद करो तुम तिनको, आगे करत रोशन ।। १३

प्रकरण ५ चौपाई १११

गोपियोंका प्रत्युत्तर

कहे सैयां सनमुख राजसों, उन वचनों के उत्तर।
जो बोलाए पीछे फिरत, ताको सुनो पडउत्तर ।। १
तुम सब बातों समरथ, क्यों वचन केहेत कठन।
जो तुम बताया हमको, सो हम विषे तजे सजन ।। २
और हमारे विषम वैभव, सो तो हैं तुमारे चरन।
क्यों हमको तुम तज सको, हम विषय माया उतारी मन ।। ३
क्यों न भजो तुम हमको, करो रछा सबन।
ज्यों उपेन्द्र इन्द्र की, करे रछा सब देवन ।। ४
जो तुम हमकों कह्या, पति बताए सवत।
और कुटुंब परिवार कहा स्वधर्म स्त्रीयोंका इत ।। ५
ए धर्मवेत्ता हम तुमको, नीके जान्या उत्तम।
तुमारो वचन न लोपनो, सब किया चाहिए हम ।। ६

तुमारो उपदेस तुम, करो ताको विचार।
सब अंतरजामी आतमा, हो तुमही सबको सार ।। ७
ज्यों एक दरखत खड़ा, ताए पानी सींचिए मूल में।
तो डाल पात फूल फल को, पहोंचत है तिनसे ।। ८
और पानी डारे पातों पर, तो कहूं ना पोहोंचत।
त्यों तुमको सेवते, सबों की सेवा होवे इत ।। ९
जो कोई हेत करे तुमसों, सोई सुफल आतम।
नित्य प्रिय तुमारो सरूप, सब सुख दाता तुम ।। १०
और तुम बताइया, पति सुत दाता दुख।
हो प्रसन्न तिन वास्ते, वरदेश्वर दे हमें सुख ।। ११
आशा हमारी पूरन, करने है सब तुम।
बोहोत दिनन की उमेद, क्यों दूर करत हो हम ।। १२
हे कमल दल लोचन, हमारे चित बांधे तुमसे।
गृह काम हम क्यों करें, चेतन आतम रही तुम में ।। १३
बाकी जड़ता आकार की, तिनसे कछुए ना होए।
चरन न पाउं छोड़ही, क्यो काम करे व्रजमें सोए ।। १४
हम तो तुमारी अंगना, सींचो अधरा अमृत।
मुरली धर अधुरसे, हंस अवलोंको हमसे इत ।। १५
कल गीत वेणु बजाए के, काम अगनी करो दूर।
जो कदी तुम ना कहो, विरहन आकार करे चूर ।। १६
और ध्यान करके जाएं, तुमारी पदवी निज धाम।
तहां हम पहोंचे तुम, तो इहां क्यों न पूरो मनोरथ काम ।। १७
हे सखे तुमसे कहे, हे कमल दल लोचन।
तुमारे चरन कमल, रमा तलासे दे तन मन ।। १८
और दिया कृपा करके, अरन्य वासीको कछू होय।
हम प्रार्थना करत है, भजत भगते सब सोए ।। १९

कोऊ पार न पावहीं तुमारी माया दुस्तर ।
रेहेत लछमी वक्षस्थल, चरन उपासना सब पर ।। २०
सब सेवक सेवही, तुलसी बसे चरन ।
ताकी रिस लछमी करै, याको एही चितवनी मन ।। २१
सब देव वांछै कटाछ जिनकी, सो रज वांछत चित दे मन ।
मोकों एही दीजिए तुम प्रियकी सेवन ।। २२
तिस वास्ते तुम हम पर, क्यों ना होत प्रसन्न ।
तुम दूर कियो दुःख व्रजको, हम प्रापत भई चरन ।। २३
सबको हम छोड़ के, करी तुमारी उपासन ।
सुंदरता सरूप की, हुआ तीवर काम उतपन ।। २४
तुमारी निरखनी से, हे पुरुष भूषन ।
तीवर कामना हमको, दे दास पना सबन ।। २५
देख मुखारविन्द को, दोऊ बाजू जुलफन ।
कुंडल कानों झलकत, है गौर गलस्थल रोशन ।। २६
अधुरामृत लालक से, हंस करो अवलोकन ।
अभय दान हमको देओ, भुजा तले रखो सरन ।। २७
अवलोको नैनन से, रहे रमा उर पर खास ।
हम और न चाहत, सेवे तुमे होय दास ।। २८
कौन स्त्री ऐसी है, इन त्रयलोकी मिने ।
जब वेणु धरो अधर पर, करो गान अमृत देओ श्रवने ।। २९
सो सुन कुल मरजाद को, ग्रेहेने ना समरथ कोए ।
सब सोभा त्रिलोक की, जाके देखने में होए ।। ३०
सो कैसे रहे ना सकत, इत कोई नाहीं समरथ ।
गाय पंखी वृक्ष मृग, कर सके न अपना अरथ ।। ३१
रोम रोम हरख होत है, जड़ पसु सब कोए ।
ऐसे भी हम ना भए, होए जड़ वृख समान भी सोए ।। ३२

भए हरने हमारे, इन वास्ते प्रगटे तुम ।
ज्यों आद पुरुष स्वर लोक की, रक्षा करे सब कुम ।। ३३
तिस वास्ते कर पंकज, धरो तपत हमारे स्तन पर ।
तुम आतम के बांधव, किंकरी करो तुमारे घर ।। ३४
श्री महामति कहे ऐ मोमिनो, एह कहे तुम सुकन ।
होए सनमुख साम के, बीच नूह किस्ती रोसन ।। ३५

प्रकरण ६ चौपाई १४६

रास विहार

कहे वचन सनमुख, झरत आंसू नैनन ।
कर रबद पीछे गिरी, सुने सबोंने वचन ।। १
एकै बेर सबे गिरी, रुदन करे जलधार ।
राज देख हाल इनों का, मैं करों सैयां विहार ।। २
आंसू पोंछे मुख के, अपने वस्तर सें ।
उठाइया अंक भर के, मैं रमूं रहूं तुममें ।। ३
मैं तुम से एक क्षन, जुदा ना सकों होए ।
तुम वल्लभ हो मेरे प्राणके, क्यों सहूं दुख तुमारो सोए ।। ४
ए वचन शुकें कहे, राजासों सम्वाद ।
राज सखियाँ सबे उठे, कर रास रमन बुनियाद ।। ५
वृन्दावन देखाया, जुगते फिर सब ठोर ।
वन गलियों जमुना तट, रहेस लीला करी जोर ।। ६
हे जोगेस्वर का ईस्वर, तब हंसे आत्माराम ।
जो अंदर सो बाहेर रमे, किए पूरन मनोरथ काम ।। ७
ता समै तिन साथ सों, करी उदार चेस्टा विहार ।
प्रफुल्लित मुख सबन के, पायो अति सुख अंग करार ।। ८

उदार हाँस करने लगे, द्विज दंत झलकत नूर ।
ज्यों गजराज विहरे वन में, ताको कह्यो न जाए जहूर ।। ९
गाती रमती इनमें, फिरे जूथ वनिता वन ।
एक एक में तीन सै, चालीस बार सहस्त्र एक तन ।। १०
माला झलकत उर पर, रमे खंड खंड वन मांहे ।
फेर रमते आए जमुना तट, रेती सुंदर झलके तांहे ।। ११
लिए बांह पसार आलिंगन, नीवी स्तन नख ग्रहे एधान ।
खेलावें लोक नीति पर, परस पर सनमान ।। १२
इन भांत सुख सागर, सब सैयां हुई गरक ।
मन इच्छित कामना, सबों पूरी हुई बुजरक ।। १३
अधिक मान गर्व सागर, मूल सरूपें देख्या इत ।
सुख सब एह धाम में, हुआ विरह दुख चाहिए वखत ।। १४
लिआ आवेस आग्या कर, अक्षर सुरत पर ।
जब सुरत एकली भई, देख्या धाम साथ निज घर ।। १५
सुरत चमक पीछे फिरी, तब भए अंतरधान ।
कहा राज कहां रमते, एही रही रटन मुख वान ।। १६
कहूं न पावे ढूंढ़ते, सब जागा ठौर ठौर ।
तब लगी रोने पुकारने, विरह किया अति जोर ।। १७
श्री महामति कहे ऐ साथजी, ए है तुमारो रमन ।
फेर याद करो तुम वीतक, सब एक ठौर मोमिन ।। १८

प्रकरण ७ चौपाई १६४

कृष्ण वियोगमें सखियोंकी अवस्था

एह कह्या श्रीभागवत, दशम स्कंध के वचन ।
उनतीसमें अध्याय मिने, कहे राज आगे सुकन ।। १

अब कहूं अध्याय तीसमा, जो किए विरह वचन।
अंतरधान समे भयो, विरहे गाय तलफे तन ॥ २
शुकजी राजासों कहे, जब भए अंतरधान।
एकै समे व्रजांगना, तपत भई सुकन कान ॥ ३
तम आंखन आय गई, विचरत विकलप मन।
ज्यों करिनी जूथ जुदा होय, त्यों फिरे विकलप तन ॥ ४
चित विभ्रम देखत फिरे, वचन कहे मनोहर।
चित्त आरूढ सरूप पर, ले लीला चित्त ऊपर ॥ ५
तैसी तैसी चेस्टा, लगी करन सब कोए।
अजू विरह व्याप्यो नाहीं, साम आतमरूप है सोए ॥ ६
ले गति साम सरूप की, और मंद मंद मुसकान।
नैनों ज्यों कर निरखत, मुख मीठी वान बोलन ॥ ७
ए सखी रास सरूप पर, आरूढ भई सबकोए।
आसा दिलमें आवनकी, अवला विभ्रम चित्त है सोए ॥ ८
न जाने वेहेवारकों, कोई गान करे बीच वन।
कोई ऊंचे स्वर आलापत, कोई रामत रंग उतपन ॥ ९
कोई विचरत वन में, कोई उनमद आकार।
कोई वन वन में फिरती, ढूंढे चित्त हरनहार ॥ १०
कोई आकासे पूंछती, रहे अंतर कहे वचन।
चित्त चितवन ढूंढन की, पूछे विलखे इन वन ॥ ११
पूछे पीपल अस्वत्थ से, ले गया चोर हमारे मन।
नंद सुत तुम देखया, कर प्रेम हांस अवलोकन ॥ १२
कहो कुरुबका हमको, नाग पुन्नाग चंपक।
लघु भ्राता बलभद्रका, देखाय भानो हमारी सक ॥ १३
भरा मद मानिनीयका, गया हर कर हांस।
तिस वास्ते हम पूछत, वनस्पती आकाश ॥ १४

कहो तुलसी तू कल्याणी, तोको प्रिय गोविंद चरन ।
अली भमर घेरा कहूं देख्या, प्रिय मारे हमारे मन ।। १५
प्रिय अच्युत हमारड़ा, मालती वृक्ष न बोले कोए ।
संग सब कोई मिलके, जाती जुथपै पूछत सोए ।। १६
सखी प्रफुल्लित है ए वृक्ष, कर माधव किया परस ।
प्रीत जनावत अंग में, है औरोंसों सरस ।। १७
वृक्ष आंबकों पूंछहीं, अच्युत बताओ ठौर ।
वृक्ष प्रियाल और पनसा, कोई बतावे हमें और ।। १८
और कोऊ पूछे वृक्ष वेलियां, और विरह करत अति कोए ।
ए जांबू विल्व बकासोक, हमकों राज बताओ सोए ।। १९
जेते तुम हो भोम पर, वृक्ष हो परार्थ काम ।
हमको क्यों ना बतावत, भई रहित पदवी साम ।। २०
कलपे हमारी आतमा, कहे ना मानै इत कोए ।
मिने स्वांतसी राजसी, तामसी चरन पूछत है सोए ।। २१
कहा तैं तप कियो पृथिवी, चरन राज फिरे तुझ पर ।
पुलकित अंग परसे थे, सखी देखो तुम यों कर ।। २२
अंग उछरंग तोकों भयो, भयो गर्व गरुआपन तोए ।
तोकों आगे वराहने, तोसों लिया आलिंगन सोए ।। २३
एक कहे एकन सों, सई ए क्यों बतावे हम ।
गर्व मान संग पति के, हिल मिल रही आतम ।। २४
एक दूजी को कहे, ऐ देखो दिल विचार ।
कहां गए राज हमसे, कोई सखी है तिन लार ।। २५
श्री महामति कहे ऐ साथजी, ए विलाप किए तुम ।
एह तुम मांग्या अरस में, सो देखावत हक हुकम ।। २६

प्रकरण ८ चौपाई १९०

कृष्ण वियोग

एक सखी दूजीको कहे, एक सखी राज के संग ।
अंग आलिंगन ले चले, दृष्ट ना देखत अंग ।। १
ए अबहीं इहां से गये, अच्युत संग निस्बत ।
सखी कुच कुंकम रंजित, कोई कलपत कोई हंसत ।। २
सुगंध अंगको आवहीं, क्यों परिमल न आई तुम ।
बाहु कंध कमल फिरावत, ए हममें कौन आतम ।। ३
संग बल रामानुज के, मधुकुल भमर फिरे ले गंध ।
इहां आए चले जात हैं, हम क्यों ना पावत संग ।। ४
वृक्ष प्रणाम करत, अस्तुत करें अवलोक ।
चरन कमल चित्त लेयके, भागत इनका सोक ।। ५
यों पूछत वृक्षन को, बाहु कंध एक दूजी पर ।
वनस्पती बोले नहीं, ताए निंदत हैं यों कर ।। ६
यों शुकजी राजाकों कहे, यों उनमत भई गोप ।
भई कायर कृष्ण देखनको, रहे ढूंढ़ काढ़ने चोप ।। ७
तामसियां परबोधहीं, क्यों विकल भए मन ।
अब ही ढूंढ़ काढहीं, करे लीलाप्रिय इन तन ।। ८
सब मिलके आपन करें, व्रज में लीला करी जे ।
आरूढ़ चित कृष्ण आतमा, इन और ना आवे दिल के ।। ९
अति आसीगो अंगमें, हम न छोड़के जाए ।
एक दूजी प्रबोधहीं, गुन देखो राज उर ल्याए ।। १०
श्री महामति कहे ऐ साथजी, एह तुमारी वीतक ।
विलाप किए बीच वनके, तुमे खेल देखाया हक ।। ११

प्रकरण ९ चौपौई २०१

व्रजलीला अनुकरण

व्रजलीला करने लगीं, जिनमें रमे श्री राज।
एह देख प्रगट होएंगे, तो होवे तुमारा काज ॥ १
कोई वेष धरे पूतना, कोई कृष्ण वेष धरे बाल।
लगी स्तन पान करावने, ताको वध करत गोपाल ॥ २
एक गाड़े को वेष करके, वेष दैत सकटासुर।
बांध झोली रुदन करे बालक, पांउ मारा ताके ऊपर ॥ ३
एह दैत इत आई, कृष्ण बालक रूप होए।
एक रक्ष रक्ष वचन कहे, मुख पुकारत सोए ॥ ४
एक वेष करे बलभद्रका, धरे बाल गोवालों वेष।
वेन बजावे अधुर धर, करे चातुरी विसेष ॥ ५
कोई वेष बछरन के, कोई अघासुर फाड़े मुख।
बाल बच्छ ले उदरमें, कृष्ण देख सखा पावें दुख ॥ ६
एक बकासुर होए के, बाल गोपाल फिरे संग।
ताए पहिचान के मारत, वह करने लगा जंग ॥ ७
एक केहे ना देखत, बच्छ गाएं गईं दूर।
वेन बाजएके टेरही, एक एक करे मजकूर ॥ ८
साधु साधु सुन वेनके, यों सिफत करें सब कोए।
कोऊबाहुलटकावेराजज्यों,कोई चले तिरछी चितवनी होए ॥ ९
कोई कहे मैं कृष्ण हों, देखो मेरी गत भांत।
ललित चाल अति सुंदर, कोई बात करे एकांत ॥ १०
ना बरसा की भय करो, एक कहे यों मुख।
मैं रक्षा करने समरथ, काहूं पैठ ना सके दुख ॥ ११
एक कहे राखे कृष्ण इन्द्र कोप मेघ धार।
अम्बर उतार कुंडली कर, टची अंगुली उठाया भार ॥ १२

आओ गोप इनके तले, कहे लकुटी टेको तुम।
जिन गिरे काहू तरफों, तुम मेरा मानो हुकम ॥ १३

एक सखी मुखसे कहे, वचन पुकारे जोर।
मैं साहे व्रजको करों, तुम कहो पुकार सब ठौर ॥ १४

एक दुस्ट आतम जिन रहे, दंड करता खलकों में।
ताए एक सखी पुकारत, कहे देख इनसे ॥ १५

एक दावानल देखावहीं, एक होए कृष्ण मुदावे नैन।
क्षेम देत सब सखा को, मीठे कहे मुख वैन ॥ १६

एक जशोदा होए के, एक कृष्ण करे अन्याए।
ताए ऊखल बांधत, एक रेंकती रोती जाए ॥ १७

एक लकुटी ले डरावत, फोड़े भाजन दधी के।
एक यमलार्जुन वृक्ष, गिराए बीच होए ए ॥ १८

इन भांत कै रामते, करे बीच वृन्दावन।
सब वनमें फिरती रहे, रहे तपत विरह अगिन ॥ १९

एकने पद देख्या परमातमा, देखावे सखी और।
नंदकुंवर इहां से गए, देखन लगी ठौर ठौर ॥ २०

पदम चिन्ह कदमों, जब व्रज अंकुस होए।
नैनों निरखे वान एही, क्यों ना पहिचानत सोए ॥ २१

ज्यों पगी होए पिगी खोजत, ता पीछे चली जांए।
पावत नाहीं पीउको, दुख आतुर तलफाए ॥ २२

अन्विच्छन्त्यो अबला, एक दूजी बतावत।
कोई भूली वन में, कहे मैं राज देखे इत ॥ २३

एक पुन फिरती वनमें, जुगल चरन देख के।
आर्तवन्त होय रही, मुख कहे कोई बतावे ए ॥ २४

कहे एक दूजीयको, रहे नंद सुत के संग।
विकल होय ढूंढ़त फिरे, ज्यों करिणी जूथ बिन अंग ॥ २५

ए कौन सखी आराधन कियो, जाय भगवान हरि ईश्वर ।
श्यामसों प्रीत बांध के, रही एकांत विहार पर ।। २६
श्री महामति कहे ऐ साथजी, यों विकल भई मन ।
ढूंढ़त फिरै ना देखहीं, फिरती वृन्दावन ।। २७

प्रकरण १० चौपाई २२८

वृन्दावनमें कृष्णकी खोज

शुकजी राजासों कहे, धंन सखी बड़ भाग ।
रेणु राज की सबों दुर्लभ, जाको कोई ना पावे सुहाग ।। १
ता रेणुमें लोटत फिरैं, जो दुर्लभ ब्रह्मादिक ।
त्रिगुन सिर धरे पावे नहीं, लगा तासों इनों इसक ।। २
अरे सखी इत राज थे, मन पावै अति क्षोभ ।
एही चरन सखी श्यामके, इनके दिल याही रहे लोभ ।। ३
अधुरामृत राजके, भोग कियो सखी इन ठौर ।
देख इहां अकेले राज थे, तिन वास्ते न देखे और ।। ४
खेद पावत पाउ देखके, हैं प्रिया इत दोय ।
इत वेन गूंथी सखियन की, फूल गिरे देखत नहीं सोय ।। ५
जो जो सखी कहत है, सोई सोई करत श्री राज ।
फिरे यों एक एक विकल्प, सब रहे ढूंढनेके काज ।। ६
देख सखी इन ठौर को, इत क्यों कर कियो विहार ।
केस पसार सखीयके, इन भांत कियो मनुहार ।। ७
वेन गूंथी हाथ अपने, एह सुगन्ध फूलन की फब ।
इहांसे गए बेर कछूना लगी, इहांसे उठे राज अब ।। ८
शुकजी राजासों कहे, आतमाराम रमन ।
सो तो अखंड लीला मिने, जुदा रहे ना अपने जन ।। ९

कामी जनकी दीनता, दुष्टात्मा स्त्रीयन ।
दोय भाव देखाए खेल में, ए देखो सैयन ।। १०
इन भांत सई ढूंढ़ते, एक सखी तलफत देखी वन ।
चेतनता कछू ना रही, रहे अति छोभित मन ।। ११
सखियां पूछत तिनको, कहां राज किस ठौर ।
क्यों कर तेरे संग थे, मिल सब करने लगीं शोर ।। १२
वनमें श्री ठकुरानीजी, ढूंढते पाई अचेत ।
वरिष्ट सब सैयन में, क्यों ना होए सावचेत ।। १३
मोकों कछू खबर नहीं, थे वन में मेरे पास ।
मैं संग चल ना सकी, बड़ो विस्वास था आस ।। १४
मेरे ही पासथें गए, भए अंतरधान ।
मैं तलफत रहे गई, मोहे और ना रही पहिचान ।। १५
हा नाथ रमण प्रिय, कहां गए मोसों दूर ।
हम अबला दासी है, खड़ी योंकर करे मजकूर ।। १६
अति लालच दरसन की, इच्छत है भगवान ।
यों देखी सखीको विलखती, दे हमको पहिचान ।। १७
सखी दुखी सब मोहित, आप पर खंडित कहे वचन ।
सब विस्मय होय रही, कलपत हैं सब मन ।। १८
फेर एकठी होयके ढूंढत फिरे सब वन ।
जहांलों चंद्र उजाला, तहांलों मिल ढूंढ़ा सबन ।। १९
जब अंधेरा आया, उहांसे फिरे सब साथ ।
अब तो हम ना पाई, एक दूजी के पकड़े हाथ ।। २०
तब राजाको संदेह भयो, टूटी आसा जब ।
तब इनके आकार क्यों रहे, एह मोकों कहो सब ।। २१
तब शुकजीने कह्या, सुन राजा कहों तुम ।
मन कृष्ण रूप होय गयो, आलापन वही आतम ।। २२

चेष्टा भी करे कृष्णकी, है कृष्ण रूप आतम।
गुन तिनके गावत, याद आकार न आया भरम ॥ २३
फेर जमुना तट आए के, जित सुन्दर रेत शीतल।
ताहां आए बैठीं सब, एक ठौर सामल ॥ २४
श्री महामति कहे ए साथजी, एह दूसरा तकरार।
अपनी वीतक देखियो, ए कहूं विरह विस्तार ॥ २५

प्रकरण ११ चौपाई २५३

गोपी गीत

एह अध्याय तीसमा कह्या, विरह वचन विस्तार।
कहूं अध्याय एकतीसमा, किए जमुना तीर विचार ॥ १
जमुना तीरे बैठके, विरहा गावत हैं नार।
गुन कों याद करकें, बिलखे कर याद विहार ॥ २
ता दिनसे व्रज मंडल, अधिक जय पावत।
जब तुमे नजर करी, आय प्रगटे तुम इत ॥ ३
ता दिनसे लखमी, व्रज सेवत दास पने।
देखाओ दरसन प्रीतम, जे जन तुमारे इन में ॥ ४
असु-प्राण हमारे, सो रहे तुमारे चरन।
तो तुमकों ढूंढत फिरे, तलपत विरहा मन ॥ ५
सरद समे जो कमल, ताकी अंदर सुंदर उदर।
तिन मानिंद श्रीमुख, ना पटंतर सरभर ॥ ६
हे सुरतनाथ तुमकों कहे, तुमारी विनमूली हम दास।
वर दे वर देने वाले, क्यों वध किया छेदी आस ॥ ७
जो तुमारे मन ऐसी थी, तो विष जलसे काहे जिलाए।
व्याल राक्षस सब ठौर से, हमें तासे काहे बचाए ॥ ८

वृषभासुर तृणावर्त से, दावानल अगन ।
इंद्र कोप वरसा करी, विश्मय भयो मेरो मन ।। ९
जो वध करने हता, तो थी बहुत ठौर ।
वारंवार रक्षा करी, कहा कहें तुम्हे और ।। १०
जेती कोई गोपिका, ताहे आनंद के देनहार ।
अखिल देही अन्तर आतमा, करे सब अरथों विहार ।। ११
हे सखे क्यों ना देखावत, अपना जो दरशन ।
समरथ सब बातसे, क्यों कलपावो मन ।। १२
हे अभये देन वाले, क्यों धूर्तपना करै हमसे ।
सरन आंई क्यों छोड़त, क्यों न देत अभय हमें ।। १३
हे कांत कर सरोरूह, सकल कामना देनहार ।
सिर हमारे पर धरो, श्रीकर ग्रहो भरतार ।। १४
व्रज के लोक की आरत, हरनहार हो तुम ।
तुम हमारे भरतार, न चाहिए तजनी हम ।। १५
अपने जो कोई निज जन, मंद मुसकनी कर ।
भानो दुख हमारडें, करो अपनाइत हम पर ।। १६
हम तुमारी किंकरी, हे कमलदल लोचन ।
वदन देखाओ सुंदर, जिन तलपाओ मन ।। १७
जो शरण तुमारे आवही, पाप जाए सब नास ।
तृण चरके पीछे फिरे, हैं लखमी जाहां निवास ।। १८
नागफनी कालीफन पर, धरे तुमारे चरन ।
कमल समान कोमल, धरो उर ऊपर ठारो मन ।। १९
रहे अगनत कामना, करो ता अगन को दूर ।
बोलो मीठी रसनाए, करो हमसों मजकूर ।। २०
बुध जो कोई पंडित, मन हरै तुमारी वान ।
निरखो मीठे नैनसों, करो हमारा सनमान ।। २१

क्यों हमकों मारत, हम पर क्यों उतारत मन।
अधर सुधारस सींचके, हैं हम तुमारे निज जन ।। २२
कदाच तुम ऐसे करो, हमारे सिर पर धरो हाथ।
सो तो सनेही पर धरो, जो मेरे आतम सौंपे साथ ।। २३
तुमारे प्राण क्यों कर रहे, कदी यों कहो मजकूर।
और पहेले तुम कह्या, सो केहेने मात्र सहूर ।। २४
हम धरे तुमारे विषे, कहे हमारे जो प्राण।
सो रहे तुमारे विषे, सो अब कहां गई पेहेचान ।। २५
जो कदी मेरे विषे प्राण थे, तो अब रहे क्यों कर।
पर एभी है केहेनेको, जो वचन कहे इन पर ।। २६
ए तेहेकीक ऐसा ही है, जैसा केहेत हो तुम।
पर हमारे प्राण निकलते, तुमारी कथाने रोके हम ।। २७
कैसी तुमारी कथा, षट गुणात्मिका होए।
जैसा सरूप तुमारा, याकों न जानत कोए ।। २८
एक ज्ञान और वैराग्य, और ऐश्वर्य जश सब।
और रमा साख्यात, होय बल पूरनता जब ।। २९
ताकों कहिये भगवान, षट गुण जाको होए।
ए न्यूनता सब मिने है, ए पूरनता रखे न कोए ।। ३०
है पूरणता तुम विषे, छ गुन साख्यातकार।
सोई तुमारी कथा मिने, षटगुण ऐश्वर्य वेहेवार ।। ३१
सोई तुमारी कथा मिने, है पूरनता सुज्ञान।
और वैराग्य है पूरन, सब जश पूरन जान ।। ३२
सब आई जश कथा मिने, पूरन लछमी कथा में जान।
तुमारे चरित्र मिने, वसे लछमी तिन स्थान ।। ३३
समस्त बल कथा मिने, जो षटगुन भगवान।
है कथा तुम बराबर, एक तुमसे अधिकता जान ।। ३४

तुमारे विरहे निकसते प्रानको, कथा रोक रही इस ठौर ।
तुमारी लीला अमृत, एह बल देख्या कथा में जोर ।। ३५
श्री महामति कहे ऐ साथजी, इन विध कहे वचन ।
तुम आपै जवाब देत हो, आगे और भी सुनो सुकन ।। ३६

प्रकरण १२ चौपाई २८९

उपालम्भ-उलाहना

यों कथा तुमारी चरचते, रहे हमारे आकार ।
और न याद आवही, रहा एक तुमारा ही विचार ।। १
तपत हमारी आतम, कथा जीवन मूल ताकी होए ।
कवि मुख गायन करी, अघ पाप हरन कही सोए ।। २
जो कोई सरवन करे, होय सब मंगल प्रापत ।
सब ही लक्ष्मी कर प्रापत, जो कथा ग्रहे इत ।। ३
बड़े भागके ते धनी, जो होय तुमारी कथा सनमुख ।
ता समान कोई नहीं, सब विध पावे सुख ।। ४
क्यों ना हंसत हो प्रिय, प्रेम कर निरखो नैन ।
विहार करो तुम हमसे, ध्यान मंगल मुख वेन ।। ५
तुम रेहेस सब जानत, दे हमकों परस सुख ।
क्यों कपट कहां राखत, हमको क्यों देते हो दुख ।। ६
जब चलते तुम व्रज से, पसु चारने वन ।
कमल समान कोमल, हैं तुमारे चरन ।। ७
सो तृण सिलान पर फिरत, सीदत हमारे मन ।
सब सैयां कायर होत हैं, हे कांत कहां जात तपे तन ।। ८
जब दिन अस्त पावत, नील घूंघरियाले केस ।
वनमें रहिके आवत, धन रज लगी भेस ।। ९
बारंबार देत दरशन, सो मन कर सुमरन ।
उरझत हैं हम दिलमें, क्यों तलफावत मन ।। १०

जो सरन आया तिनकों, सकल कामना दे तिन ।
लखमी जाय अरचन करे, धरनी भोम मंडन ।। ११
ध्यान करे जो कोई, वाकी आपदा हरनहार ।
कमल समान ए चरन, संत सेवे कर सार ।। १२
सो हमारे स्तनों पर, क्यों न करो रमन ।
हरो व्याध हमारडी, आय चित्त करो परसन ।। १३
सुरत काम वरधन, शोक नास करन-हार ।
मुरलीने चुंबित किये, नीके अधरको आहार ।। १४
भूलत और राग को, जे कोई है मनुख ।
दे तुमारो रमन, कर अधर अमृत हे सख ।। १५
जब तुम फिरते वनमें, एक त्रुटि काल जब जाय ।
होय कोट जुगन काल, ऐसो समे लखाय ।। १६
जब हम न देखे तुमको, कुटिल कुंतल राजत मुख ।
जब पलक बीच पड़ती, तब पावत विधि पर दुख ।। १७
क्यों आड़ी पलक करी, निरखत नंदकुमार ।
बड़ा जड़ ब्रह्मा भया, जिन एता न किया विचार ।। १८
ए सरूप मुख निरखते, क्यों पलकें हुई नैनन ।
सुख लेने हमें न देवही, यों केहेती मुख बैन ।। १९
पति सुत भ्रात बांधव, ताय उलंघ आइया हम ।
एक विलंब ना करी छिनकी, गीत मोहित भई तुम ।। २०
हे कितब कपटी तुम बन, कोई तजे योषिता वन ।
तामें भी निसा समे, क्यों तलफावे मन ।। २१
हमारा रेहेस तुम जानत, हमें काम उदय होय ।
तो मिलाप तुम क्यों ना करों, अंग परस करो सोय ।। २२
हमारे तुम सनमुख, हँस देखो आनन ।
कटाछ कर हम सनमुख, देखो दोऊ नैनन ।। २३

दु:सह विरह हम देखत, पावे सरूप तुमारो धाम ।
एही इच्छा हमको रही, मन उरझत इन काम ।। २३
व्रजके जन जो कोई हैं, हे आरत हरने प्रगट ।
सब विस्वके मंगल, क्यों न भानो हमारे संकट ।। २४
तज मनका कपट, सजन होय आतम ।
क्यों अंत:करन कलपावत, करो अंगीकार हम ।। २५
जब चरन कमल कुच धरतीं, कोमलता आतम अतिसार ।
डरतीं कठन उर जान के, ताको करत विचार ।। २६
तिन कोमल चरनसे, फिरत भोम पर तुम ।
बुध हमारी फिरत है, कृपण होत आतम ।। २७
श्री महामति कहे ऐ साथजी, कहे विरहे वचन ।
एह तुमारी वीतक, कहूं आगे सुनो श्रवन ।। २८

प्रकरण १३ चौपाई ३१७

श्रीकृष्ण प्राकट्य

शुकजी राजासों कहे, यों कर व्रजकी नार ।
विरहे विलाप विचित्र, रुदन करे जलधार ।। १
स्वर सुन्दर सोहामनो, क्रस्न सरूप लालसा ।
एकै स्वर रुदन करे, रहे अन्दर दरसनकी आस ।। २
तिन सैयन के घरों मिने, मंद मुसकनी अंबुज मुख ।
उर माला पट पीतांबर, लिए इसक सरूप सब सुख ।। ३
मन्मथ कामको मथते, भये प्रगट मध्य जुवतिन ।
अवलोकत प्रीतमको, भये प्रफुल्लित मन ।। ४
अबला द्रष्टें देखके, ज्यों मृत आवे प्रान ।
त्यों सैयां सब ठाढ़ी भई, सुन स्वर भूषन कान ।। ५

कोई सखी श्रीराजको, करसों ग्रहे कर हाथ।
सौरी सुभट संग्राममें, कोई लेत आलिंगन बाथ॥ ६
कोई मुदित मुख आयके, बांह धरे मुदित स्कंध।
चंदन चूआ चरचित, जुगते धरे सनंध॥ ७
कोई सखी आगे आय के, अंजली धरे आगे मुख।
तांबूल प्रसादी पावने, इच्छा कर इच्छे सुख॥ ८
कोई सखी ढिग आय के, कर धरे ऊपर कुच सोय।
तपत काम अगनसे, यों कर अति सुख होय॥ ९
कोई भृकुटी चढायके, प्रेम विकल होय नार।
मारत बान कटाक्ष सों, मुख क्रोधावेश वेहेवार॥ १०
कोई सखी नैनों कर, निरखे नंदकुमार।
पलकों पल न वालती, नेत्र खुले रखे द्वार॥ ११
कोई पान करे मुख नैन, तृपत ना होवै मन।
ज्यों अघावै न संत सेवनमें, सो अतंत पावत चैन॥ १२
कोई सखी नेत्र द्वारने, ग्रहे सरूप हिरदे अन्तर।
ध्यान धरे नेत्र मूदके, अब क्यों भागे बाहेर॥ १३
जब रूप भराना अन्तर, भई रोम रोम हरषित नार।
ज्यों जोग सिद्ध जोगेश्वर, प्रफुल्लित अङ्ग सुखकार॥ १४
सब सखी श्रीराजके, अवलोकत आनंद अङ्ग।
पर उत्साह होने लगा, सब रमे राजके संग॥ १५
विरह जनित जे ताप थे, ते छूट गये सबन।
ज्यों ग्यानी चतुरसों मिल, त्यों प्रफुल्लित भए हैं मन॥ १६
गए शोक सब साथके, मिलीं अच्युत व्रत भगवान।
शोभित सब सैयनमें, वैभव पुरुष समान॥ १७
श्री महामति कहे ऐ साथजी, अङ्ग उपज्यो अति सुख।
तुम विरह विलास रस देखिया, मांगी थी माया दुख॥ १८

प्रकरण १४ चौपाई ३३५

जलक्रीडा एवं संवाद

एह लीला भागवतमें, अध्याय बतीसमें होए।
इहां लीला जो करी, बताऊं आगेकी सोए ।। १
तहां सेती फेर उठके, आए जमुना तीर।
गुंजार भमर करे, जमुना उज्जल नीर ।। २
फूल सुगंध प्रफुल्लित, वन गहेरी छाया सुख विहार।
तहां सैयां सब परवरी, राज करत मनुहार ।। ३
समे रुत शरद की, ससांक स्त्रवत अमृत।
दूर कर अंधेर को वन चेतन उज्वल इत ।। ४
जमुना हस्त तरंग से, आय परस करे चरन।
तित कोमल रेत बिछाय के, सेवत है सब तन ।। ५
झीलन राज सखिन संग, जमुना जल प्रवेश।
जल छलके रामत करे, जानी आतम खेस ।। ६
बहु भांते रामत रमे, क्रीड़ा अति विस्तार।
सखी श्यामके सनमुख, अति घनो कियो विहार ।। ७
फेर निकसे सिंगार को, वस्तर पहिनाए सखी चार।
श्रीठकुरानीजीय को, और एक एकसे करे मनुहार ।। ८
श्री राजके दरशन को, बड़ो अङ्ग आहलाद।
धोयो रोग हृदयको, सुख पायो रस काम संवाद ।। ९
भई मनोरथ के अन्तको, प्रापत ज्यों श्रुति वेद।
जाय नेत नेत कर गावही, शास्त्र न पावे भेद ।। १०
कुच कुंकम अङ्कित, उतारे जो वस्तर।
ताको आसन करके , साम बैठाए ता पर ।। ११
जब राज सिनगार कर, खड़े जमुना तट।
तब सखी सिंगार करके, जो ठाढ़ी थी निकट ।। १२

ता सखीए रेती पर, ओढ़नी बिछाई यों कर।
राज विराजो या पर, ऐसो कियो आदर ॥ १३
और सखी देख कर, ल्याई अपना वस्तर।
ता ऊपर बिछाय के, यों पहोंची सेवा कर ॥ १४
राज चरन धर के, जब लागे बैठन।
तब और सखी लागी विछावने, लगी मनुहार करन ॥ १५
यों आसन सब साथ के, वस्तर का बड़ा होए।
कुच कुंकुम अंकित सबे, कियो आसन सोए ॥ १६
ता पर राज बैठाए के, साथ बैठी सखियां घेर।
सामी नैनों नैन मिलाय के, विरह चढ़ आया फेर ॥ १७
ता आसन के ऊपर, बैठे श्री भगवान।
जोगेस्वर हिरदे नहीं, आसन कलपे जान ॥ १८
तामें कबहूं न आवहीं, ताय गोपी करे चकास।
लखमी जो त्रिलोक की, ले शोभा बैठे खास ॥ १९
सभा ऐसी सोभती, होय अनंग दीपन काम।
हांस लीला कटाक्ष कर, सखी इच्छत सरूप साम ॥ २०
अंग परस कर बैठियां, हस्त कमल चरन।
कोई अंगसों अंग लगाएके, कोई चरन धरे तपत स्तन ॥ २१
कोई अस्तुत करे मुखसे, कोई सनेह भर देखे नैन।
कोई कोप अति धरके, सनमुख कहे वेन ॥ २२
एक आसंका मनमें, इत हमें उपजी आए।
ताको उत्तर हमको, तुम नीके देओ समझाए ॥ २३
एक भजे भजते को, एक विपरजय होय।
एक भजे दूजा ना भजे, विपरजय कहिए सोय ॥ २४
और दूसरा भज के, ना भजने वाला और।
ए दोऊ कौन ना देखत, ए कौन कहां इनों का ठौर ॥ २५

इन प्रश्नका उत्तर, हमको देओ श्री राज।
तुमतो सब कछू जानत, देओ जवाब इन आवाज ।। २६
सुनो सखी मैं कहूं तुमें, इन उत्तर को काज।
स्वारथको जो भजत है, मिथ्या ताको है साज ।। २७
जहां स्वारथ अरथ भयो, ना तहां सुहृदय धरम।
गायको दूध वास्ते, सेवत मिथ्या करम ।। २८
अनभजते को जो भजे, माता बाल सेवे सार।
तहां सुहृद धरम है, मध्यम एह वहेवार ।। २९
जो भजनवाले ना भजे, तो अनभजते भजे क्यों सोय।
यामें विवेक देखना, जन चार प्रकार के होय ।। ३०
एक आतमा राम है, दूजे आपत काम।
तीसरे कृतघ्न कहे, गुरु द्रोही चौथो नाम।।३१
ए कृतघ्न वचन पर, लगी समस्या करन।
मिल आपसमें बातां करे, सो राजें सुनी श्रवन ।। ३२
नाहीं सखी मैं इनमें, मोही भजे सांच जो कोए।
ताकी विरती वधारने, बीच अंतर पाया सोए ।। ३३
ज्यों एक आगे निरधन, ताए धनकी प्रापत होए।
फेर धन तासे जावही, धनरूप चित होए सोए ।। ३४
एह नीके मैं जानत, मेरे अरथ तुम जीते लोक वेद।
सेवा तुम सब सैयन की, मैं नीके जानत भेद ।। ३५
ना ओसीगल मैं हो सकूं, लेऊं ब्रह्माकी आयु बल।
नित्त नए उपकार करों, तोभी न परे मोहे कल ।। ३६
जो भानी तुम गृह श्रृंखला, काहू और न भानी दूरजर।
वेद मरजादा तोड़के, तुमारे कोई ना सरभर ।।३७
श्री महामति कहे ऐ साथजी, एह तुमारी वीतक।
आगे तुमारा रमन, सो कहे भानों शक ।। ३८

प्रकरण १५ चौपाई ३७३

रास रमण

अब कहूं अध्याय तेतीसमां, जामें रमन कह्यो श्री राज ।
सैयनको सुख देन के, करत रास रमन को काज ।। १

इन भांत भगवान के, सैयां मिल सुने शुकन ।
सुशीतल वानीयसों, अति हुए प्रफुल्लित मन ।। २

ताप विरहा छोड़के, अंग रमन भए चेतन ।
रास रमनकी इच्छा करी, सबों सुख पायो आतम ।। ३

आरंभ कियो श्रीराजने, रास क्रीडा करन विहार ।
अंग उछरंग अंगना, करत सबे मनुहार ।। ४

सब स्त्रियोंमें रतन, एक दूजीसों करे प्रीत ।
बाहुसों बाहु बांधके, करी रास रमनकी रीत ।। ५

प्रवरतत रास उच्छव, गोपी मंडल है मंडित ।
जोगेस्वरोंका ईस्वर, होए दोय दोय सैयों बीच इत ।। ६

ता अंदर प्रवेश करके, कंठ ग्रहे बांहें दोए ।
सैयनके निकट रहे, एक एक फिरत हैं सोए ।। ७

दिवौकस चारों दिसा, भयो आनंद अंग उजास ।
उच्छव आतम सरूपको, करके पूरी सबोंकी आस ।। ८

दुंदुभी नगारे बाजहीं, हुई फूल वरसा जलधार ।
गंधर्वपति स्त्री लेयके, जश गायन करे विहार ।। ९

चेतन चरनके भूषन, वलय नूपुर घुंघरी घमकार ।
और कटि मेखला किंकिणी, स्वर मीठा उठे मनुहार ।। १०

संग योषिता कृष्णाजी, स्वर भूषन सबद सोहाए ।
सखियां जुथ चालीस, संग बारह हजार रास कह्यो सोए ।। ११

तिन साथमें शोभित, सखियों बीच भगवान ।
कहेवे को पुत्र देवकी, इत शोभा ना पहोंचे उपमान ।। १२

ज्यों मरकत मणि रोशन, कुंदन में जड़ित है नंग ।
त्यों सैयां कुंदन रूप हैं, मध्य जड़ित साम के संग ।। १३
न्यास पदनके नाचते, भुज बाहु लटके फिरते ।
हांस करें मंद मुसकनी, करे भौं विलास बातों के ।। १४
चलत कुच भुजन मध्य, झलके पट वस्तर सिनगार ।
हलै झलकत कानों कुंडल, करे गंडस्थल झलकार ।। १५
झांई मुख पर झलकत, वेण गूंथी फूल गिरत ।
स्वर सुन्दरसों गावहीं, कृष्ण वधू सखियों शोभित ।। १६
ज्यों गरजत बीज चमके, मध्य मेघ घटा श्याम होए ।
त्यों सैयां चमके बीज ज्यों, घटा साम सरूप है सोए ।। १७
अति ऊंचे स्वरनसे, जुगल सरूप करे गान ।
नीके निरत करत हैं, सुख देखावत दे मान ।। १८
रति काम प्रिय परसपर, सब हरखत अंग परस ।
भई सैयां सुख सागर, रमत रास लीला सरस ।। १९
कोई सखी संग राजके, कंठ गायन स्वर मिलाए ।
और सखी अस्तुत करे, ले अति भले स्वर गाए ।। २०
तब हंसी चरन को, एक दूजीको करे प्यार ।
अतिमान पायो राजसे, करे अति रस सुख विहार ।। २१
कोई रास रमते थकी, कृष्ण कंध धरे बांहे ।
सिथिल भई ठाढ़ी रहे, गिरे भोम फूल तांहे ।। २२
धरे बाहू राजकी कंध पर, चंदन चूआ चरचित ।
ताकी परिमल लेयके, मुख फेर फेर चुम्बत ।। २३
कोई सखी उत आएके, निकट खडी श्री राज ।
गालसों गाल लगाएके, करत अपनो काज ।। २४
कोई मुखसों मुख मिलायके, ले तंबोल प्रसादी जान ।
अंग अंगसो मिल गई, यों कर देत सनमान ।। २५

कोई निरत करत है, कोई गायन करे सनमुख।
स्वर कटि मेखला नूपुर, ए सबदमें ना आवे सुख ।। २६
कोई हाथों फेरत कमल, कोई कर धरे कुच पर।
सो सैयां सुख पावत, रमे राजसों इन पर ।। २७
गोप्यो पाया एकांत कर, लखमी का भरतार।
दोए बाहूं कंठ धरके, अति सुख होत विहार ।। २८
श्री महामति कहे ऐ साथजी, कह्या तुमारा रमन।
भी तुमें आगे कहूं, ज्यों दिल होए रोशन ।। २९

प्रकरण १६ चौपाई ४०२

रास विहार

भी कहूं रमन रासमें, जो तुम किए विहार।
सब भातों तुमको कह्या, अति सुख दिए भरतार ।। १
वन विहरत करे गायन, करन उत्पलित भूषन।
गाल कपोल झलकत, देखे शोभा प्रफुल्लित मन ।। २
नूपुर घूघरी किंकिनी, स्वर सुन्दर सुखदाए।
सखी सनमुख सामके, करी निरत बनाए ।। ३
सुंगध सार केसनकी, प्रेमल बेहेकत जोर।
तहां भमर फिरत रहे, गुन्जन करे अति शोर ।। ४
इन भांत कै रामत, मिल करी रासमें जब।
कर कुच ग्रहे परसमें, सच व्यान हांस किया तब ।। ५
हांस अवलोकन प्रेमका, कटी विलसत विहार।
रमे रमाड़े व्रजवधू, करत सुख मनुहार ।। ६
शुकजी राजासों कहे, इत हूजो खबरदार।
मैं रासलीला कहत हों, जो रहस नित विहार ।। ७

जिन संदेह इत ल्यावही, मैं बरजों राज तोए।
ज्यों कर अरभक बालक, दरपन रमता होए ॥ ८
त्यों सैंयां सरूप राजका, इहां दूजा नाहीं कोए।
अपने अंगसों रमत हैं, रेहेस क्रीडा अति होए ॥ ९
प्रेमदा कुल व्रजवधू, इंद्री भोग विहार।
केस दुकूल वस्तर, कूच हस्त ग्रहे आकार ॥ १०
रस सरूप ऐसी भई, खबर ना रही सुखकार।
भूषन वस्तर खिस गए, करते अति विहार ॥ ११
क्रीडा करी जो सामने, सत सैयों को दियो मान।
दिवौकस देवता कहे, रहे विसमित आसमान ॥ १२
शशांक जो कह्यो चंद्रमा, पीडित भयो देख काम।
गण नक्षत्र चकित भया, थिर होय रह्या इस ठाम ॥ १३
किए सरूप जो अपने, जेती सखी आतम नाम।
रमे तिन गोपिनसों, लीला सुख सब काम ॥ १४
जो आतमाराम अंदर, विहरत हैं सब वन अंग।
सोई बाहेर रमत हैं, अपने सरूपके संग ॥ १५
अति विहार कियो या समे, तासां वदन भए श्रांत।
पोंछत मुख करुना कर, रमे ठौर ठौर एकांत ॥ १६
अनंग काम मनोरथ, सबोंके पूरन भए साथ।
अंगसों अंग मिलायके, कई भांत रमे ले बाथ ॥ १७
कानों कुन्डल झलकत, गौर गलस्थल झलकत।
सखी कुन्तल केस ग्रहे, इन समें सब शोभा लेत ॥ १८
गाल गंडस्थल हंसत, मुदित हास करे मुख।
नैनों अवलोकन करे, कह्यो न जाए ए सुख ॥ १९
साम सरूप मान देत हैं, कर उर सुख अति विहार।
कृत कृत्य पूरन जानती, मन्मथ मोद सुखकार ॥ २०

ता समें श्रम अङ्ग संग, नैनों नैन हुए एक ।
रंजित हैं कुच कुंकुम, कियो विहार रामत अनेक ।। २१
बेहेकत सौरभ सुगंध, तहां भमर करे गुन्जार ।
मानूं गंधर्वपाल आयके, गायन करे विहार ।। २२
ज्यों गज विहार करत, रहे स्व गजिनी संग ।
त्यों ही विहरत वनमें, सखी लिए अपने अङ्ग ।। २३
अतंत अस्थल सोभित, संग जुवती विहार ।
परस परे विनोद की, प्रेम नैनों करे निहार ।। २४
हंसत हेत अति मोदसों, अंगसों अंग लगाए ।
फूल वरषावे विमान सों, करे देवता ऊपर से आए ।। २५
हरषत अस्तुत करत हैं, करे लीला ज्यों गज इंद्र ।
ए दृष्टांत विहार के, शोभा ना पोहोंचे इंड ।। २६
इन भांत श्रीकृष्णजी, वन थल जल विहरत ।
सुगंध फूल दोऊ तट, बेहेकत अतंत इत ।। २७
ताहां भ्रमर गुंजार करे, विहरत अंगना साथ ।
ज्यों गजराज करिणी संग, चलै चाल लटकनी ग्रहे हाथ ।। २८
संझा को चंद्र कर शोभित, निसा रात्रि में बन ।
सत काम व्रजअंगना, मिल जूथ सबे जुवतन ।। २९
सखा कियो है आतमा, सुरत समै सुखदाए ।
सकल काव्य कथा रस, रस बातां करे बनाए ।। ३०
श्री महामति कहे ऐ साथजी, तुम किए इन भांत विहार ।
कई सुख देखे रासमें, कह्यो ना जाए सुमार ।। ३१

प्रकरण १७ चौपाई ४३३

राजा परीक्षितकी शंकाका समाधान

इत राजा परीछितको, शंसे उपजा मन ।
धर्म स्यापना करने, इस वास्ते अवतार भगवान ।। १

सो क्यों धर्म मरजाद की, पुलको डारे तोड़।
जो है धर्मका वक्ता, रक्षा करत है जोड़॥ २
जगतका जो ईश्वर, सो क्यों परदारा करे रमन।
ऐसो आचरन क्यों करे, ब्रह्म अद्वैत पद जिन॥ ३
आप्त काम है जदुपती, करै जगनिंदित क्यों करम।
कौन अभिप्राय इनको, ए भानो मेरो भरम॥ ४
ए सुकन सुकें सुनके, मन दुख पायो अपार।
जोश था सो उतर गया, वह समै ना रह्या लगार॥ ५
रासलीला का सुख, रह गया इन भांत।
उत्तर राजाको दिया, रेह गई मनकी खांत॥ ६
धरम व्यतिक्रम ईस्वर, करते दोष ना लागे कोए।
तेजस्वीको ना लगे, सब भखे अगनी सोए॥ ७
और जीव होएके कोई, चाहिए करे ना कबहूं मन।
बिन ईस्वर दुख पावही, मूढ़ विनाश पावै तन॥ ८
ज्यों रुद्र विष पानको, लोप ना सके लगार।
औरको बोय आवते, उड़ जाए आकार॥ ९
ईस्वरोंके वचन, सत कर जानिए सोए।
आचरन कोइक लीजिए, बुधवान विचारना होए॥ १०
जो कोई कुशल आचरै, स्वारथ अपने के।
तो विपर्यय अनरथ होए, प्रभु अहंकार रहित है ए॥ ११
अखिल सत्व जो कोई, त्रिर्यक मानुष देव।
तिन सबनकों ईस्वर, कुशल जाने सब भेव॥ १२
जिनके चरन कमलकी, आई जरा खुशबोय।
ऋषि भ्रमत हुए तिनसे, करम जोग प्रभावे धोए॥ १३
अखंड पद सब पायके, निर्भय होए विचरत।
ताकों कछू लागे नहीं, पाप पुन्य ना करमकृत॥ १४

तिन प्रभुकी इच्छासे, काहू ना होए बंधन ।
तो तिनकों कहा लगत है, होए मुगत विचरत मन ।। १५
गोपी गोपनके पत, और देह धारी सब कोए ।
जो अंतर सो बाहेर में, ए तो एकै क्रीड़ा करे सोए ।। १६
ए अनुग्रह सखियन पर, करे धर मानुष देह ।
जैसे चाहे तैसे रमे, पार पहोंचे सुन सनेह ।। १७
भए रास व्रज दोऊ अखंड, ताको सुनो नीके निरने ।
सैयां तुम विचारियो, जाग्रत बुध ले इने ।। १८
श्री महामति कहे ऐ साथजी, ए रासलीला सनमंध ।
आगे कहूं और भी, तीसरे ब्रह्मांडकी सनंध ।। १९

प्रकरण १८ चौपाई ४५२

।। इति रास लीला ।।

उपसंहार

एह बात अद्वैत ठौर की, जित द्वैत भाव ना होए।
सत् चित् आनन्द रूपमें, सदा सुख कहियत सोए ।। १
तहां दुख ना परसे कदी, ना कबूं इच्छा उपजे मन।
ना नया पुराना होवही, सदा सुखकारी तन ।। २
ताहां रबद इसक का, रहे हमेसा जब।
राज आशिक सैयनका, सखियां आशिक कहे तब ।। ३
श्री ठकुराणीजी कहे, मैं आशिक तुमारी।
और आशिक सखियनकी, ए दिल देखो विचारी ।। ४
राज कहे रबद ना करो, तुमे देखाऊं वेवरा कर।
जब देखो खेल कबूतर, तब पाओ पटंतर ।। ५
जब जुदे होए मोसों रहो, हाल जैसा होवे तैयार।
तब मैं तुमकों जानूंगा, जब मैं करोंगा खबरदार ।। ६
तब मूल मिलावे मांगिया, सब सैयों मिलकर।
खेल देखाओ माया मिने, फेर फेर रबद करे योंकर ।। ७
जब अग्यार वरस बावन दिन, काल माया देखाया इंड।
तब राज विचार किया, जोगमायाका ब्रह्मांड ।। ८
निकलते स्वांतसियों, दुख देखे छोड़ते आकार।
तलफी राजसी उथले, रही तामसी लड़नेको होसियार ।। ९
फेर रामत रस चढी, सुख में भई मगन।
राजने तब देखिया, रहे विरह मनोरथ तन ।। १०
इन सैयों मूलमें माँगिया, हमको देखाओ दुख।
सो तामसियों ना देखिया, है सदा धाम में सुख ।। ११
तिस वास्ते इच्छा भगवान पर, कर नीद आधी दई उडाए।
चेतन जोगमाया मिने, खेलत अति सुख पाए ।। १२

जब रामत रस चढ़ी, भईयां सुख मगन ।
तब अपना आवेस खैंचिया, रह्या अक्षर सुरतका मन ।। १३
देख सैयां सुरत फिरी, चमक जगी अपने ठौर ।
अंतरधान सैयोंमें भए, विलाप कियो अति जोर ।। १४
अक्षर बुध जाग्रतमें, देख्यो जोगमाया ब्रह्मांड ।
बुधे ग्रही नीके कर, एह कबूं ना भूले इंड ।। १५
फेर आवेस देयके प्रगटे, सब सैयों बीच आए ।
फेर रामत रमे सैयोंमें, झीलन जमुना तट कराए ।। १६
फेर बैठे आरोगने, तहां करने लगे मजकूर ।
विरह हिरदे चढ़ आए, भाने संसै कर सहूर ।। १७
तब सुन सुकन राजके, इहां भागे सुपन ।
अक्षर ठौर अपने भए, सखियों के मुड़के मन ।। १८
पर इच्छा खेल देखनकी, रही तामसियों जोर ।
अक्षर चित्त सदासिव, चित्ते पहेले देख्या व्रज ठौर ।। १९
व्रजलीला चित्तमें चुभ रही, नंद जशोदा गोप गोवाल ।
गोपी-गोप गैया सबे, यों अखंड भया वह खेल ।। २०
बुधमें रास अखंड, चित्तमें व्रज अखंड ।
राजें सैयों चित्त देखके, तीसरे मन फेर्या इन इंड ।। २१
राज साथको देखके, ए तामसियों न देखे दुख ।
तिस वास्ते एह किया, हुकम भया श्रीमुख ।। २२
एह सोई ब्रह्मांड, हुआ फेरके सुपन ।
तब अक्षरको उपज्या, एह तीसरे फेरा मन ।। २३
नंद जाने मैं नंद, जशोदा जानै हूं मैं ।
गोपी गोवाल त्यों के त्यों, सब उठे अपने घरों से ।। २४
एह शुकजी राजासों कही, अब भया इत प्रात ।
त्योंकी त्यों क्रीडा करे, आसल ब्रह्मांडकी भाँत ।। २५

रात ब्रह्म मुहुर्त बाकी रही, सखियोंको राजें करी रजाए ।
इछा पीछे रह गई, ठौर पोहोंची धाम सदाय ।। २६
काहू रिस ना करी तीसरे मिने, माया मोहित सब जन ।
सब जाने हम पास है, व्रज सुंदरी व्रज में तन ।। २७
एह क्रीडा व्रज सुंदरी, और विष्णु थे अवतार ।
जो अग्यार दिन वेष बागे, गोकुल मथुरा कियो विहार ।। २८
एह पंच अध्याई श्रद्धाकर, सुने गाए करे प्रेम ।
हिरदे रोग जाए धीर होए, कर संसार पोहोंचे क्षेम ।। २९
सात दिन गोकुल में रहे, चार दिन मथुरा में ।
कंस मार वसुदेव छोडे, उग्रसेन राज पाया इनसे ।। ३०
जब मथुरा घेरी सेना ले, जरासंधे ले लसकर ।
तब चिंता आतुर भए, बैकुंठसे विष्णु आए फेर ।। ३१
एह अवतार संपूरन, सोल कला संपूरन होए ।
मथुरा द्वारका लीला, एक सौ बार वरस करी सोए ।। ३२
फेर पहोंचे बैकुठ में, एह लीला अवतार ।
अपने संग जोस हुकम, भेज्या परवरदिगार ।। ३३
जो आए बीच आरब, महंमद अलेहसलाम ।
हकीकत लिखी साथकी, ल्याया अल्ला कलाम ।। ३४
सब में किया जाहेर, दावत जो इसलाम ।
आवे रूहें फिरस्ते, तुम उमेदवार रहो इस ठाम ।। ३५
हजरत ईसा आवेगा, और महदी इमाम ।
और उम्मत अरसकी, भई पहिचान तमाम ।। ३६
खुदा आप आवेगा, काजी होए ले हिसाब ।
तब ईमान जो ल्यावही, सो पावे बडो सवाब ।। ३७
महंमद ईसा इमाम, इसराफील बजावे सूर ।
तब कलजुग दज्जालको, होए मारने का मजकूर ।। ३८

अग्यारै बारै मिने, होए आठों भिस्त जाहेर ।
तब सब खलक दौड़ेगी, होएकै माहिर ।। ३९
हजरत ईसे के इलमसे, सब होवे एक दीन ।
साफ दिल सब होयके, ल्यावेंगे आकीन ।। ४०
कायम होवे सायत, छ दिन जिन दरम्यान ।
पहिले खेले व्रज में, ताकी होवे पेहेचान ।। ४१
दूसरा दिन रासमें, तीसरे आए बरारब स्याम ।
चौथे दिन हजरत ईसा, पांचमें दिन इमाम ।। ४२
छठा दिन जुमेका, जित मिले खलक तमाम ।
तहां लेखा सबका जाहेर, होए बीच दीन इसलाम ।। ४३
एह सायत अरश की, सो सबों देखी जाए ।
मोमिन का मरातबा, देत खुदा बताए ।। ४४
दीदार भया दुनियां को, पोहोंचे मोमिन अपने ठौर ।
उठे आठों भिस्त अक्षर में, तब मुआ दज्जालका जोर ।। ४५
महामति कहे ऐ साथजी, एह दूसरा तकरार ।
अब आगे तीसरे की, जो देखाया परवरदिगार ।। ४६

प्रकरण १९ चौपाई ४९८

।। धाम, व्रज एवं रास लीला संपूर्ण ।।